SHRI R. M. HAJARNAVIS: May be.

AN. HON. MEMBER: And Kanarese too.

SHRI R. M. HAJARNAVIS: I am quite sure that the article in our Constitution which speaks of language contributing to the common culture and its development, would be more effective if Sanskrit becomes a common language taught all over the country. But then that would depend upon the set-up at the secondary education stage and on the reorganisation of secondary education and whether the boy entering school at the age of six is going to leave it at the higher secondary level. These days, there is a bifurcation, I find, at about the age of eleven. What happens in my part of the country is that when the boy is at the age of eleven, he decides whether he is going to study the humanities or whether he is going to study the sciences and technology. And with the present need for scientific and technological studies, the study of Sanskrit is being neglected. This ought not to be the case. Recently, for about four or five years, a controversy has arisen, a deep and acute controversy in England, by Sir Charles Snow's lecture in which he brought out the separateness of the two cultures. He asked what a student of humanities knows about the second law of thermodynamics. There was a good deal of controversy on the point which he made. He appreciated that there ought to be a constant interchange between the humanities side and the science side. A man becomes a better scientist if he has some basic understanding, some basic conception, of the humanities. That again, as I said, is an educational problem, not a problem of implementing any safeguard of the linguistic minorities. All I can now say is that I do hope that, year after year, it will be our privilege to submit these reports about the linguistic minorities and I also hope That as time advances, the report shall become slimmer and slimmer and at the end of a few years very soon I shall be able to come to this House and say that there are no linguistic minorities and there are no complaints. To that consummation I look forward.

MOTION *RE* PROMOTION OF TOURISM

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. GOVINDA REDDY): Now we shall take up the next motion, the one about promotion of tourism. Who will move it. Mr. Vajpayee? Your name stands first.

श्री ए० बी० वाजपेयी (उत्तर प्रदेश): उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि :

> "पर्यटन संवर्धन सम्बन्धी विवरण पर, जो ६ सितम्बर, १९६३ को राज्य सभा की मेज़ पर रखा गया था, विचार किया जाये ।"

इस विवरण में मंत्री महोदय ने जो एक समिति कायम हुई थी पर्यटन के विस्तार करने के सम्बन्ध में विचार करने के लिये, उसकी सिफारिशें संक्षेप में हमारे सामने रखीं हैं । अभी कमेटी की सिफारिशों पर सरकार ने क्या फैसला किया है, इस पर प्रकाश नही डाला गया है । मुझे विश्वास है कि इस विवाद में जो विचार व्यक्त किये जायेंगे, उनको ध्यान में रख कर सरकार इस कमेटी की सिफारिशों पर शीघ्र ही निर्णय करेगी ।

कमेटी से यह कहा गया था कि वह इस बात का पता लगाए कि जो विदेशी यात्री हमारे देश में आते हैं उनकी संख्या कम क्यों हो रहीं है । जो आंकड़े दिए गए हैं उनसे यह कमी स्पष्ट है । सन् १९५९ तक हमारे देश में पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होती रही । लेकिन सन् १९६० में और १९६१ में उनकी संख्या घटी और अनुमान लगाया गया है कि

सन् १९६२ मे ३ ९ फीसदी की कमी हुई जब कि अन्य देशो मे इसी बीच मे १३ फीसदी की वृद्धि हुई । कमेटी ने इस कमी को तो हमारे सामने ज्वलत रूप मे रखा है, लेकिन यह कमी क्यो हुई इसका कोई सतोषजनक उत्तर नही दिया है । सकट काल के कारण विदेशी यात्रियो के आने पर प्रभाव पडा है, लेकिन स्वय कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार सकट काल की घोषणा होने के पहले ही विदेशी यात्री कम सख्या मे आने लगे थे । इसका क्या कारण है ? क्या सुविधाये कम थी ? कुल मिला कर हमारे देश मे विदेशी यात्रियो के लिये सुविधाये कम है, लेकिन सन् १९६२ मे या उससे पहले सन् १९६०, १९६१ मे ये सुविधाये अचानक कम हो गई और यात्रियो की सख्या एक दम घट गई, यह मानने के लिये कोई तथ्य हमारे सामने नही है । कुछ लोगो का यह भी कहना है कि जो आकडे दिए गए हैं वे सही आकढे नही हैं और सरकार इस सम्बन्ध मे ठीक तरह से आकडे नही रख सकी है । कुछ भी हो, हमे इस बात का प्रयत्न करना है कि हमारे देश मे विदेशी, पर्यटक बडी सख्या मे आये । उनसे विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती है । यह नगद लाभ है जिसकी हम उपेक्षा नही कर सकते । दुनिया के अनेक देश ऐसे है जिन्होने अपने व्यापार का घाटा विदेशी पर्यटको की यात्रा को प्रोत्साहन दे करके पूरा किया है । लेकिन हमारे देश मे उतनी मात्रा मे अभी पर्यटक नही आते । रिपोर्ट के अनुसार यह लक्ष्य रखा गया है कि २० फी सदी यात्री प्रति वर्ष बढते जाये । यह लक्ष्य कैसे पूरा होगा इसका कोई साफ विवरण नही दिया गया है । कमेटी ने अपनी रिपोर्ट मे पर्यटन को प्रोत्साहन देने के मार्ग मे जो कठिनाइया हैं उनकी ओर इशारा किया है और उन कठिनाइयो को दूर करने के लिये सुझाव भी दिए है, कुछ सुझाव बडे उपयोगी हैं और शासन को उन्हे अमल मे लाना चाहिये । विदेशो मे प्रचार से ले कर जहा विदेशी जाना चाहते है उस स्थान तक और जब तक वह वापस नही जाते है तब तक इस बात का प्रयत्न करना होगा कि वह भारत मे आने के लिये आकृष्ट हों और जब आकृष्ट हो जाएं, भारत मे आ जाए, तो भारत से सतुष्ट हो कर जाय । अभी विदेशों में हमारे प्रचार की पर्याप्त व्यवस्था नही है अधिक टूरिस्ट आफिसेज़ खोले जाने चाहिये । यहा के सौंदर्य के स्थान, पुरातत्व के अवशेष, नये भारत का बदलता हुआ मानचित्र ये सब पर्यटकों के लिये आकर्षण की वस्तुए है लेकिन विदेशो मे प्रचार की कमी है । एक

3 P.M. सुझाव इस सम्बन्ध मे मै देना चाहूगा । अपनी पिछली अमरीका यात्रा म मैंने देखा कि जो हमारे टूरिस्ट आफिस है उन्हे दुबारा काम करना चाहिये, विदेशो से यात्री हमारे देश मे आएं उनकी जानकारी देने का प्रबन्ध तो करे लेकिन भारत मे भी जो यात्री जाते हैं उन देशो मे उनके लिये भी अगर कोई सहायता आवश्यक हो तो टूरिस्ट आफिस को देने मे आपत्ति नही होनी चाहिये । मैं सैनफ्रांसिसको के टूरिस्ट आफिस मे गया था, उन्होने कहा हम आपको तो कुछ बता नही सकते क्योकि हम तो खाली अमरीका मे रहने वालो की चिन्ता करते हैं ।

[THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JANHANARA JAIPAL SINGH) in the Chair]

मैं समझता हू कि दोनो जिम्मेदारिया निभाने मे टूरिस्ट आफिस को कोई कठिनाई नही होनी चाहिये ।

असल मे समस्या तब शुरू होती है जब विदेशी पर्यटक भारत की भूमि पर पैर रखता है, उसे स्वागत का वातावरण नही मिलता, कस्टम वाले उस पर इस तरह से झपटते है जैसे वह हमारे देश मे मेहमान बन कर नही आये बल्कि चोरी छिपे माल लाने के लिये आये है या चोरी छिपे माल ले जाने के लिये आये है, कस्टम का अनुभव अच्छा नही है । इस कमेटी ने सिफारिशे की है इस तरह की फारमलिटीज़ को, औपचारिकता को कम किया जाय और मुझे विश्वास है कि इस

[श्री ए० बी वाजपेयी]

सम्बन्ध में दृढ़ता से कदम उठाना होगा। विसा देने में अधिक उदारता होनी चाहिये और जिनके पास वापिसी का, आगे जाने का, टिकट है उनके विसा के आवेदन के साथ बैंक गारन्टी देने की जरूरत नही होनी चाहिये। जो बिना विसा के आते हैं उनको भी कमेटी की सिफारिश के हिसाब से ७२ घंटे घूमने फिरने की छुट्टी होनी चाहिये, वह अगर वापस जाना चाहते हैं तो चले जायें लेकिन जितनी देर वह भारत की भूमि में रहें एक कैदी की तरह से न रहें, देश की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए और आवागमन के नियमों का पालन करते हुए जितनी हम छूट दे सकते है उतनी छूट जरूर देनी चाहिये। विदेशी मेहमान सामान भी लाते हैं और उसकी बड़ी बुरी तरह से छानबीन होती है, छानबीन में कोई आपत्ति नही है मगर उसके ढंग में आपत्ति है। क्या सौजन्य केवल एक सप्ताह के लिये ही सुरक्षित रखा जाता है—हमारे सरकारी विभागों में एक पद्धति चल गई है कर्टसी वीक मनाने की और मुझे ऐसा लगता है कि जितनी कर्टसी है वह उसी वीक में खत्म कर दी जाती है और साल में बाकी जो हफ्ते बचते हैं उनमें कर्टसी से काम नही लिया जाता है। हवाई अड्डों पर, बन्दरगाहों पर जहां विदेशी पर्यटक उतरते हैं वहां उनके साथ सौजन्य का व्यवहार हो, उनके मार्ग में कम से कम कठिनाइयां खड़ी की जाये। वह कैमरे लाते हैं और उन्हें यह डर होता है कि कभी फिल्म नहीं मिले, इस सम्बन्ध में भी कमेटी ने सिफारिश की है, हवाई अड्डों पर भी हम ड्यूटी-फ्री-शाप्स खोल सकते हैं जैसी कि दुनिया के अन्य हवाई अड्डों पर खाली गई हैं।

شری اے - ایم - طارق : (جموں اور کشمیر) وهاں شراب بکتی هے -

†[श्री ए० एम० तारिक (जम्मू और काश्मीर) : वहां शराब बिकती है।

श्री ए० बी० वाजपेयी : शराब बेचने में भी कोई आपत्ति नही है लेकिन बेचने का अर्थ यह नहीं है कि वह पी जाय, जो पीना चाहते हैं वह पियें, सब के लिये जरूरी नही है।

श्री प्रकाशनारायण सप्रू (उत्तर प्रदेश) : बिल्कुल ठीक।

श्री ए० बी० वाजपेयी : इस रिपोर्ट में शराबबन्दी का भी जिक्र है। मैं नहीं जानता यह कहां तक सही है लेकिन ऐसा कहा जाता है कि भारत में विदेशी पर्यटकों के आने में सब से बड़ी कोई बाधा है तो वह हमारी शराबबन्दी की नीति है। मैं नहीं समझता कि अगर विदेशी पीना चाहते हैं तो किसी को आपत्ति क्यों होनी चाहिये, जितनी पीना चाहे पियें, दिल खोल कर पियें, छुट्टी के दिन भी पियें और सुख के दिन भी पियें . . .

श्री बैरागी द्विवेदी (उड़ीसा) : भूख के दिन भी पियें।

श्री ए० बी० वाजपेयी : भूखे तो पीना मुश्किल बात है।

तो कमेटी ने सिफारिश की है कि आल इंडिया परमिट होना चाहिये, राज्यों के अलग अलग नियम हैं, उनसे कठिनाई पैदा होती है और जो हमने मद्य-निषेध की नीति अपनाई है वह देशवासियों के लिये है, विदेशी अपने ढंग से रहने चाहियें और उसमें रुकावट नहीं होनी चाहिये। एक बात मेरे ध्यान में लाई गई है, मैं नहीं जानता कहां तक ठीक है, कि जिन राज्यों में शराबबन्दी की नीति चल रही है वहां अगर विदेशी पर्यटक शराब लेने जाता है तो बार के काउंटर पर एक पुलिस का अफसर अपनी वर्दी में बैठा रहता है और यह देखता रहता है कि कौन है, कितना लेता है और कितना पीता है। मैं चाहूंगा कि मंत्री महोदय इस बात का खंडन करें, मगर शराब के काउंटर पर पुलिस वर्दी पहन कर बैठो रहे तो मैं नह समझता कि

†[ ] Hindi transliteration.

नशा हिरन हो जायगा या नशा और चढ़ेगा, अगर नियत्रण करना है, अगर कानून का पालन करना है तो उसका कोई और रास्ता अपनाना चाहिये, वहा छाती पर ही सामने पुलिस के अफसर को वर्दी मे बिठा देना यह तो शिष्टाचार के अनुकूल भी नही है, मैं कह नही सकता कि यह बात सच है या नहीं, मुझे बताया गया है, यह तो मत्री महोदय ही बतायेगे कि यह बात सच है या गलत है लेकिन अगर यह सच है तो यह बात सर्वथा आपत्तिजनक है, अवाछनीय है और इस बात को किसी तरह से दूर करनी चाहिये ।

सबसे बड़ी बात इस कमेटी ने यह कही है कि हमारे देश मे होटलो की कमी है, ऐसे होटल जो विदेशी मेहमानो का आतिथ्य कर सके उनकी कमी है, , पर्यटकों की सख्या बढ़ रही है मगर उसके अनुपात में होटल मे बिस्तरो की सख्या नही बढ रही है । हमारे देश के होटल उद्योग ने प्रगति तो की है लेकिन अगर वह प्रगति मे पिछड़ रहा है तो उसकी सहायता के लिये शासन को आगे बढ़ना चाहिये । इस कमेटी की सिफारिशो मे यह स्पष्ट नही है कि कमेटी सरकार से क्या चाहती है । यह कहा गया है कि सरकार होटल बनाये लेकिन फिर कहा गया है कि वह होटल बनाये तो मगर चलाये नही क्योकि होटल चलाने मे कठिनाइया हैं, होटल चलाने मे कुशलता लगती है और शायद उतनी कुशलता का परिचय शासन नही दे सकता और ऐसी गोलमोल भाषा मे कहा गया है कि होटल बना कर सरकार को चाहिये दूसरो को दे दे । मैं नही समझता कि होटल बनाना है तो आप चलाये क्यो नही और अगर चलाते नही हैं हैं तो बनाइये मत । इस सम्बन्ध मे कमेटी की रिपोर्ट के जो वाक्य हे उनकी ओर आपका ध्यान खीचना चाहता हू । रिपोर्ट मे पृष्ठ सख्या ३४ पर कहा गया है —

"The only point which we would emphasise here is that in recommending that the State should build more hotels we are not necessarily implying that the State should also undertake the management and running of all the hotels that it builds. The service which a hotel provides is essentially personal in nature. It also needs a fair amount of expertise. Even with the best of service there will be dissatisfied customers."

फिर कहा गया है कि अगर सरकार होटल चलायेगी तो सरकार की आलोचना होगी, मंत्री महोदय को सीधी चिट्ठियां लिखी जायेंगी जिससे देश के नाम को बट्टा लगेगा और कहा गया है कि सरकार होटल बनाये और दूसरों को चलाने के लिये दे दे । किसको दे दे ? और इसमे विदेशियों को भी, फारेन आपरेटर्स को भी लेने की बात कही गई है— मैं इस बात से सहमत नही हूं । हम होटल चलाने के उनके तरीको को अपनायें, अगर टेकनिकल नो-हाऊ चाहिये वह भी हम प्राप्त करे लेकिन होटल का मैनेजमेंट भारतीयों के हाथ मे ही होना चाहिये, उससे होने वाली आमदनी भी जिसमे विदेशी मुद्रा शामिल है, देश के भीतर रहनी चाहिये और अगर हम फारेन आपरेटर्स को प्रोत्साहन देने के लिये तैयार हैं तो देश के भीतर जो होटल उद्योग को बढ़ावा देना चाहते हैं उनको अच्छी शर्तों पर कर्जा देने मे कोई बाधा नही आनी चाहिये । लेकिन ऐसा दिखाई देता है कि इस क्षेत्र मे भी हम विदेशियो के हाथ मे प्रबन्ध रखते जा रहे हैं जो कि हमने अन्य क्षेत्रों मे स्वीकार नही किया है । फारेन कोलेबोरेशन मेरी समझ मे आ सकता है, उनके ज्ञान का हम लाभ उठाए, इसमे भी आपत्ति नही है । लेकिन, प्रबन्ध और मुनाफा यह सब भारत मे रहना चाहिये । इस दृष्टि से इस कमेटी की सिफारिशो मे कोई स्पष्ट बात नही की गई है । अन्त मे कहा गया है कि एक कारपोरेशन बनाया जाय जो डिपार्टमेंट आफ टूरिज्म के द्वारा की जाने वाली विदेशो मे प्रसिद्धि के काम को अपने हाथ मे ले लेगा । यह कारपोरेशन कम्पनीज एक्ट के अन्तर्गत होगा और साथ मे डिपार्टमेंट आफ टूरिज्म

[श्री ए० बी० वाजपेयी]

भी चलेगा । कमेटी की सिफारिशो से स्पष्ट नही है कि इस कारपोरेशन की क्या बडी आवश्यकता है । अगर वह स्टेट्युटरी बाडी नही होगा तो डिपार्टमेट आफ टूरिज्म से अलग वह कौन सी जिम्मेदारी निभायेगा, इस बात को भी स्पष्ट नही किया गया है । मैं नही समझता कि अभी इस कारपोरेशन को नियुक्त करने का समय आ गया है, लेकिन यह बात ठीक है कि हम विदेशियो के लिये सुविधाओ मे वृद्धि करे । अनुमान यह लगाया जाता है कि शायद हमारी हवाई सर्विस बढ़ते हुए पर्यटको की सख्या को देश मे इधर उधर ले जा नही सकेगी । अधिक हवाई जहाज प्राप्त किये जाने चाहिये । कमेटी ने भी एक सिफारिश की है कि आगरा से लेकर जयपुर तक की डाकोटा सरविस होनी चाहिये। मगर जब वह सरविस की माग रखी जायगी तो हवाई जहाजो की कमी सामने आयेगी, और अगर हम बीस फी सदी पर्यटको की सख्या प्रति वर्ष बढाना चाहते है तो उसके अनुपात मे हवाई जहाजो मे स्थान की व्यवस्था हो । इस ओर ध्यान देना हमारे लिय आवश्यक होगा ।

रेलो मे भी पर्यटक यात्रा करते है यद्यपि ऐसे पर्यटको की सख्या घट रही है । दूसरी ओर यह सख्या बढने की सभावना है क्योकि वे अधिक सख्या मे आ रहे है । कम आमदनी वाले पर्यटक लोग भारत की ओर आकृष्ट हो रहे है । लेकिन रेले जिस तरह से चल रही है उससे बडी निराशा होती है । मै एक घटना मत्री महोदय के सामने रखना चाहूगा । ४ नवम्बर को कुछ विदेशी पर्यटक बम्बई से आ रहे थे । उन्हे साची देखने के लिये साची मे उतरना था। उन्होने पहले खबर दे दी थी कि पजाब मेल साची मे रुकनी चाहिये और हम लोग साची मे उतरना चाहते है । लेकिन साची के स्टेशन पर पजाब मेल नही रुकी ।

श्री बी० डी० खोबरागडे (महाराष्ट्र) उसमे चीफ मिनिस्टर नही थे गाडी रुकवाने के लिये ।

श्री ए० बी० वाजपेयी गाडी आगे चली गई । हम लोग जो उनके साथ थे, हमने फर्स्ट क्लास के एटेन्डेन्ट के जरिये जजीर खीची और गाडी जगल मे जाकर खडी हुई । फिर गार्ड से कहा गया कि आप गाडी वापस प्लेटफार्म पर ले चलिये तो गार्ड ने अपनी असमर्थता प्रकट की । उसने कहा कि यह काम तो कन्ट्रोलर कर सकता है, मैं नहीं कर सकता । और विदेश मेहमानो को, पर्यटको को, जगल मे लाकर रेलवे लाइन के नीचे उतार दिया गया । वे अपना सामान खुद लाद कर ले गये क्योकि वहा कोई मजदूर नही था । मैंने पता लगाया तो मालूम हुआ कि ऐसी अनेक घटनाये हो चुकी है जब सूचना देने के बाद भी साची मे पजाब मेल खडी नही होती, आगे बढ जाती है और विदेशी पर्यटक कठिनाई मे पड जाते है । ये बाते बन्द होनी चाहिये । हा, मुझे अभी ऐसी घटना देखनी बाकी है जब किसी मुख्य मत्री ने कहा हो कि मुझे किसी चुनाव मे जाना है और रेलगाडी अमुक स्टेशन पर रोक दो और फिर वह रेलगाडी स्टेशन मे नही रोक कर जगल मे रोकी गई हो । मुख्य मत्री के साथ ऐसी गुस्ताखी कौन कर सकता है ? मगर विदेशी मेहमानो के साथ इस प्रकार का व्यवहार हो रहा है, यह बडे खेद की बात है । रेल मत्रालय को इस सम्बन्ध मे बडी कठोरता से काम लेना चाहिये ।

जैसी बसो की उनके लिये आवश्यकता है वैसी बसो की व्यवस्था भी हम विदेशी पर्यटको के लिये नही कर पा रहे है । कुछ टैक्सिया लगाई गई है जो गिने चुने हाथो मे पहुची है लेकिन वे भी जरूरत को पूरा नही करती । कमेटी ने इस बात की ओर सकेत किया है और यह बात सच है कि अब जत्थो मे, दस, बीस, पचास के ग्रुप मे आने वाले पर्यटको

की संख्या बढ़ रही है, उसमें उन्हें खर्च भी कम पड़ता है और एक प्रगति भी मिलती है । ऐसे लोग जब जत्थों में आते हैं तब उनके लिये ठीक से व्यवस्था की जा सके, इसका अभी तक प्रबन्ध नहीं किया गया है । कमेटी ने सिफारिश की है कि इस तरह के टूरों में जो विदेशी पर्यटक आते हैं उनकी यात्रा का इंतिजाम सार्वजनिक क्षेत्र में होना चाहिये, पब्लिक सेक्टर में होना चाहिये । पैकेज टूअर्स आप चाहे सार्वजनिक क्षेत्र में करें या निजी क्षेत्र में, मगर जो लोग जत्थों में आते है उनकी ओर पूरा ध्यान दिया जाना चाहिए ।

एक बात की ओर मैं और संकेत करूंगा । उस दिन सदन में बताया गया कि श्रीनगर में एक होटल के लिये ढाई लाख रुपये के करीब विदेशी मद्रा दी गई है ।

The VICE-CHAIRMAN (Shrimati Jahanara Jaipal Singh): Mr. Vajpayee, you have taken over 20 minutes. Please try to finish.

SHRI A. B. VAJPAYEE: I am just finishing. यह ढाई लाख रुपये की विदेशी मुद्रा किसे दी गई , जिनको दी गई क्या उन्हीं को देना आवश्यक था ? वे श्रीनगर के कितने होटल चलाते हैं, कितनी जायदाद, कितनी दुकानें, कितने होटल उनके कब्जे में पहुंच गए हैं, बिना इन सब बातों का विचार किये हुए उन्हें ढाई लाख की विदेशी मुद्रा होटल बनाने के लिये दी जाय– यह तो सरकार जो घोषणा करती है कि वह सम्पत्ति का एकत्रीकरण करने से लोगों को रोकेगी, उन घोषणाओं के अनुरूप नहीं जाता । श्रीनगर में, काश्मीर की घाटी में, जो विदेशी यात्रियों के लिये सौन्दर्य का स्थान है, वहां सारे विदेशी पर्यटकों की सुविधाएं , होटल, दुकानें आदि, कुछ मुट्ठी भर आदमियों के हाथों में इकट्ठा होती जा रही है । कहा जाता है, बाकी भारत के लोग श्रीनगर में जाकर नहीं बस सकेंगे क्योंकि वे वहा जमीन खरीद लेंगे, लोगों का शोषण करेंगे, मगर काश्मीर के लोगों को आज बिड़ला और टाटा से डर नहीं है, रशीद और मजीदों से डर है, जिन्होंने काश्मीर में आर्थिक साम्राज्य के लिए काम किया है ।

मैं अन्य विषय इस सम्बन्ध में लाना नहीं चाहता लेकिन इस बात की जांच होनी चाहिये कि किन परिस्थितियों में श्री मजीद को बम्बई में होटल चलाने के लिये ढाई लाख की विदेशी मुद्रा दी गई । सरकार अगर पब्लिक सेक्टर में आना चाहती है तो श्रीनगर में खुद एक होटल खड़ा करे । और भी पार्टियां हैं जो श्रीनगर में होटल खड़ा कर सकती हैं । अगर एक ही व्यक्ति के हाथों में सारी सुविधाएं दे दें और फिर यह दावा करे कि हम सम्पत्ति के एकत्रीकरण को रोकना चाहते हैं, तो वह कोई अर्थ नहीं रखता । मैं आशा करता हूं कि इस कमेटी की सिफारिशों पर फैसला करने में सरकार जल्दी करेगी और विदेशी पर्यटकों की संख्या देश में बढ़ेगी, विदेशी मुद्रा भी प्राप्त होगी, सांस्कृतिक सम्बन्ध भी दृढ़ होंगे और नव-निर्माण में लगे भारत का चित्र दुनिया के हर एक कोने तक पहुंचेगा ।

The question was proposed.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAHANARA JAIPAL SINGH): As there are a number of speakers, Members will please restrict their speeches to ten minutes' duration. Shri A. M. Tariq.

شری اے - ایم - طارق : میڈم وائس چیرمین - میرے دوست آنریبل ممبر باجپئی صاحب نے جو موشن اس ہاؤس کے سامنے رکھا ہے - میں اس کی تائید میں کھڑا ہوا ہوں - باجپئی صاحب کی اس بڑی تقریر کے بعد انہوں نے میرے لئے کہنے کو بہت کم رکھا ہے لیکن پھر بھی تائید کرنا میرے لئے بہت ضروری ہے -

چاہئے - میں سمجھتا ہوں اس مقصد کو پیش نظر رکھتے ہوئے سرکار نے جو کمیٹی بنائی ہے اس کمیٹی کی رپورٹ ۱۹ ستمبر کو اس ایوان میں رکھی گئی - جہاں تک اس رپورٹ کا تعلق ہے مجھے اس سے اختلاف ہے کہ اس ملک میں اس ٹورزم کو کارپوریشن کی شکل دینے سے پیشتر ان مسئلوں کی طرف توجہ دینی چاہئے - اس رپورٹ کے بنانے کے بارے میں میں ایوان کی توجہ دلانا چاہتا ہوں کہ جنہوں نے اس رپورٹ کو بنایا ہے جن کے ہاتھ میں یہ کام سونپا گیا ہے وہ سرکار کو ایک ایسی رپورٹ پیش کریں جو ٹورزم کے بارے میں سرکار کوئی کام کر سکے - میں نہیں سمجھتا ان میں سے کوئی بھی صاحب ایسے ہیں جن کو ذاتی طور سے یا دفتری طور سے ٹورزم سے ذرا بھی تعلق ہے یہ ٹھیک ہے کہ یہ لوگ بہت بڑے بڑے افسر ہیں، سرکار کے بڑے بڑے سیکرٹری ہیں اور میں سمجھتا ہوں کہ شاید وزیر نے ان بڑے بڑے افسروں کو اور سیکرٹریوں کو خوش کرنے کے لئے اس میں رکھا ہے - لیکن جہاں تک اس کمیٹی کا تعلق ہے ٹورزم ایک انسان اور دوسرے انسان کے ملنے سے بیدار ہوتا ہے - اصل میں یہ پبلک ریلیشن ہے ان میں وہی لوگ ہیں جو عام سے بہت دور بستے ہیں جو دن بھر دفتروں میں قلم گھس گھس کر تھک

[شری اے - ایم -طارق]

میڈم وائس چیئرمین - جہاں تک ٹورزم کے معنی میں سمجھتا ہوں وہ یہ ہے کہ ملک کے رہنے والے لوگ دوسرے ملک کے رہنے والے لوگوں کے ساتھ تعلقات بڑھائیں - وہ تعلقات سیاسی بھی ہوں، سماجی بھی ہوں اور اقتصادی بھی ہوں - ٹورزم کے معنی صرف یہ نہیں ہیں کہ باہر سے آئے ہوئے لوگوں سے ہم فورن ایکسچینج کی صورت میں دولت کمائیں - ٹورزم کے معنی یہ بھی ہیں کہ وہ لوگ جو اس ملک میں ٹورزم کی صورت میں مالی امداد دینا چاہتے ہیں وہ جب ہندوستان سے واپس جائیں تو انہیں یہ احساس ہو کہ ایک اچھے ملک ایک بڑھتے ہوئے ملک سے، ایک ایسے ملک سے جس کے پیچھے ایک بہت بڑی تاریخ ہے واپس جا رہے ہیں - انہیں اس بات کا احساس نہ ہو کہ وہ ایسے ملک میں آئے ہیں جو شاید ابھی ان کے ملک سے دو سو، تین سو سال پیچھے ہے - اس کے لئے اس چیز کی ضرورت ہے وہ لوگ وزیر ہوں، تاجر ہوں یا اور لوگ ہوں جن کا ٹورزم سے تعلق ہے اس میں شوق پیدا کیا جائے اور باہر سے آنے والے لوگوں کے ساتھ اچھا سلوک پیدا کر سکیں - اس سلوک کو پیدا کرنے کے لئے سرکار کو بہت کچھ کرنا ہے - اور سرکار کو بہت کچھ کرنا

پہاڑوں میں جن کے چھوٹے موٹے ہوٹل ہیں ان کا ریپرزینٹیٹو ہوتا ایسے لوگ ہوتے جن کو کسٹم میں چھ چھ گھنٹے تک کھڑا ہونا پڑتا ہے تو ایسے لوگوں کو اگر کمیٹی میں لیا جائے گا تو وہ صحیح شکل بتا سکیں گے - اس لئے میں سرکار سے درخواست کرتا ہوں کہ یہ چیز بے حد ضروری ہے کہ اگر سرکار واقعی اس ملک میں ٹورزم کو بڑھانا چاہتی ہے تو اس کے لئے ایک کمیٹی بنائی جائے اور اس میں ایسے لوگوں کو لیا جائے جن کا واقعی ٹورزم کے معاملہ میں کچھ نہ کچھ تعلق ہو یا جو اس کی تکلیفوں کو جانتے ہوں -

جہاں تک باجپئی صاحب نے کہا ہے میں ان کی باتوں کی تائید کرتا ہوں - میرا خیال ہے کہ ہم جب ٹورزم کی بات کرتے ہیں تو آپ کو یہ معلوم ہونا چاہئے - میں نے اخبار منگایا تھا، پتہ نہیں کہاں ہے - یہ اسٹیٹسمین ہے جس کے بارے میں یہ کہا جاسکتا ہے کہ وہ نہ رائٹ ہے نہ لیفٹ ہے لیکن ایک اچھا اخبار ہے وہ جو کچھ کہتے گا ہاؤس اس کی تائید کرے گا - اس اخبار نے ایک خبر ٹورسٹ گائیڈ کے بارے میں چھاپی ہے جس کو میں آپ کے سامنے رکھنا چاہتا ہوں - جس عظیم الشان ملک میں ایسے ٹورسٹ گائیڈ انسان موجود ہوں جن کو یہ معلوم جاتے ہیں اور شام کو کسی مہمان کی حیثیت سے کلبوں میں جاتے ہیں - ان میں سے شاید ہی کوئی ایسا ہو جن کو کبھی ٹیکسی کی ضرورت پڑی ہو اور جو کبھی کسی آرڈنری ریسٹورنٹ میں جاتے ہوں - جنہیں کبھی بھی کسٹم میں چار پانچ گھنٹے کھڑے ہونے کا اتفاق ہوا ہو - جن کو ہوائی جہاز کا ٹکٹ نہ ملتا ہو - جنہیں ریلوے کی سیٹس مانگنے پر ان سے یہ کہا جائے کہ تمہارا نام ساتویں نمبر پر ہے - شاید ان میں سے کوئی ایسے صاحب ہوں جنہیں یہ تمام تکلیفیں اٹھانی پڑی ہوں - اگر کوئی ہوٹل میں رہنا چاہتا ہے تو ان سے کہا جاتا ہے کہ تمام ہوٹل بک ہیں یہ وہ لوگ ہیں جن کو یہ کہہ سکتے ہیں کہ آسمان سے اترے ہیں اور زمین ان کے لئے جنت بن گئی ہے - تو اس طرح کے لوگ عام لوگوں کی تکلیفوں کو کس طرح محسوس کر سکتے ہیں - تو میں سرکار کی توجہ اس طرف دلاؤں گا کہ جب بھی کمیٹی بنائی ہے تو وزن برابر رکھنا ہے جیسے شعر میں مصرعہ پر کرنے کے لئے - تو ایسی کمیٹیوں میں ایسے شخصوں کو رکھا جاتا جن کا ٹورزم سے تعلق رہا ہوتا - کوئی ٹرانسپورٹ کا آدمی ہوتا، کوئی ہوٹل چلانے والوں کا ریپرزینٹیٹو ہوتا - کشمیر کے ہاؤس بوٹ اونروں کا ریپرزینٹیٹو ہوتا -

ہوتا ہے کہ کسی آدمی کو دوائی کے ذریعہ زندہ کیا گیا ہے اور اس نے بولنا بھی شروع کر دیا ہے - اس کو یہ معلوم نہیں کہ جب وہ فوت ہوں گے تو دنیا کافی بدل چکی ہوگی - تو ایسے لوگوں کو گائیڈ بنانا اور پھر یہ کوشش کرنا کہ ہم دنیا کے ملکوں کے سامنے کھڑے ہو جائیں ٹھیک معلوم نہیں دیتا ہے -

جہاں تک ہمارے ارادوں کا تعلق ہے جہاں تک ہمارے امن کا تعلق ہے یہ ضروری ہے کہ ہمیں ترقی کرنی ہے لیکن ترقی کرنے کے لئے جو بنیادی چیزیں ہیں ان کو ہم نظر انداز نہیں کر سکتے ہیں - ٹورزم کے معنی صرف یہ نہیں ہیں کہ ہم بڑی بڑی کانفرنسیں کریں اور ۔ کے بڑے بڑے لوگوں کو یہاں بلائیں - ٹورزم کے معنی یہ ہیں کہ ہم اپنے لوگوں میں اس بارے میں شوق پیدا کریں - ان میں ایجوکیشن بڑھائیں اور اس کے بارے میں باقاعدہ تعلیم دیں - ٹورزم کے معنی یہ بھی ہیں کہ ہم جب لندن کے کسٹم میں پہنچتے ہیں جب ہمارا سامان کھولا جاتا ہے تو کھولنے کے بعد طے کرکے ہمارے سوٹ کیس میں رکھدیا جاتا ہے ہندوستان میں کسٹم والے کسی باہر کے آدمی کا یا ہندوستان کے آدمی کا سامان جب کھولتے ہیں تو

[شری اے - ایم - طارق]

نہیں ہے کہ قطب مینار اور اشوکا لاٹھ میں کتنا فرق ہے، تاج محل اور لال قلعہ میں کتنا فاصلہ ہے راج بہادر اور طارق میں سے وزیر کون ہے ایسے لوگ ملک میں ٹورسٹ ریزرویشن بنانا چاہتے ہیں - باہر کے لوگوں سے درخواست کی جاتی ہے کہ آپ تشریف لائیے اور ہمارا ہوٹل چلائیے - تو میں حکومت کی توجہ اور وزیر صاحب کی توجہ اس بات کی طرف دلانا چاہتا ہوں کہ جب تک ہم ان چھوٹی چھوٹی باتوں کو اور بنیادی باتوں کو ٹھیک نہیں کر سکتے ہیں تب تک ہم اس ملک میں ٹورزم کو بڑھاوا نہیں دے سکتے ہیں - میں نے حکومت کی مہربانی سے اور پارلیمنٹ کے کرم سے کچھ باہر کے ملکوں کا دورہ کیا ہے - میرے ساتھ وزیر صاحب بھی تھے، ٹرانسپورٹ اینڈ کمیونیکیشن وزارت کے سیکریٹری مسٹر فلپس بھی تھے اور بہت لوگ تھے - جب ہم لوگ ٹوکیو میں گئے جب ہم ٹوکیو شہر میں بس میں بیٹھکر سیر کر رہے تھے تو اس میں کمینٹیٹر موجود تھا اور اس کی کمینٹر سے یہ محسوس ہوتا تھا کہ یہ درو دیوار بولتے ہیں اور اپنی تعریف کرتے ہیں اور اپنی تاریخ بتاتے ہیں اور لوگوں کو دعوت دیتے ہیں کہ ہم کو دیکھئے - ایسے ملک میں جب گائیڈ سے واسطہ پڑتا ہے تو معاف کیجئے ایسا معلوم

تو ان لوگوں کی خوراک پوری نہیں ہوتی -

एक माननीय सदस्य : یہ نام آپ کیسے جان گئے ؟

شری اے - ایم - طارق : یہ آپ کی صحبت کا اثر ہے - اگر میں پی نہیں سکتا تو نام تو یاد رکھ سکتا ہوں - تو میں سمجھتا ہوں کہ اس طرح کی پابندی نہیں لگائی جانی چاہئے - اگر میں لندن جاتا ہوں اور مجھے وہاں ویجیٹیرین فوڈ نہ ملے تو مجھے تکلیف ہوگی -

श्री प्रकाश नारायण सप्रू : आप वैजिटेरियन फूड पसन्द करते हैं ?

شری اے - ایم - طارق : نہیں صاحب - میں تو نان ویجیٹیرین ہوں ہم لوگوں کو کوئی تکلیف نہیں ہوتی ہے دنیا میں - تکلیف تو ہوتی ہے ویجیٹیرین کو یہ اس لئے میں عرض کر رہا ہوں کہ جب ہمیں خود اس بات کا احساس ہوتا ہے کہ ہماری مطلب کی خوراک لندن اور پیرس وغیرہ میں نہیں ملتی ہے اور ہم بھاگ کرکے آتے ہیں اور ہم میں سے بہت سے لوگ ایسے ہیں جو اپنا پروگرام ختم کرکے وہاں سے جلدی بھاگنا چاہتے ہیں تو ہم کو یہ بھی دیکھنا چاہئے کہ یہ باہر کے لوگ جو یہاں آنا چاہتے ہیں ہم ان پر اس قسم کی پابندیاں نہیں لگا سکتے- پھر اسی آدمی کو خود اپنا سامان پیک کرنا پڑتا ہے اور اس میں کئی گھنٹے صرف کرنے پڑتے ہیں - تو ان سب چیزوں کی طرف سرکار کو توجہ کرنی چاہئے -

جہاں تک شراب کا ذکر کیا گیا ہے میں باجپئی صاحب کا شکریہ ادا کرنا چاہتا ہوں کہ وہ کافی بدل گئے ہیں اور مجھے امید ہے وہ اسی طرح سے بدلتے رہیں گے - انہوں نے شراب کی تعریف کے بارے میں بات کہی میں کھلے دل سے اس کی تائید کرتا ہوں کہ غیر ملک کے سیاحوں کے لئے شراب کھولدی جانی چاہئے - میں بھی اس کی تائید کرنا چاہتا ہوں - اس میں کوئی شک نہیں کہ میرے مذہب میں شراب لما حرام ہے - مجھ پر حرام ہے - میں نہیں پیتا لیکن میں یہ کیسے کر سکتا ہوں اور کیسے کسی شخص کو روک سکتا ہوں جب وہ شراب پینا چاہتا ہے جس کے لئے کہ شراب خوراک کا ایک حصہ ہے - غیر ملک میں شراب کو لوگ صرف اس لحاظ سے نہیں دیکھتے جس لحاظ سے ہندوستان کے لوگ دیکھتے ہیں - ان کے لئے تو شراب جو ہے وہ خوراک کا ایک حصہ ہے - جب تک ان کی ٹیبل پر، ڈنر ٹیبل پر لنچ کے وقت کوئی وائن اپیٹائزر نہ ہو، جن نہ ہو

[شری اے - ایم - طارق]

دنیا میں ایسا کوئی اخلاقی قانون نہیں ہے جس کے تحت ہم کسی شخص کی خوراک پر پابندیاں لگائیں کہ آپ ہمارے ملک میں یہ کھا سکتے ہیں یہ نہیں کھا سکتے ہیں یہاں کھا سکتے ہیں وہاں نہیں کھا سکتے ہیں - آپ کو شاید اس بات کا احساس نہیں ہے لیکن ان لوگوں کو ہے جن کا کچھ نہ کچھ ان لوگوں سے اٹھنا بیٹھنا ہوتا ہے - ہم تو کلب میں بیٹھ کر کے شراب پی سکتے ہیں ہوٹل میں بیٹھکر کے شراب پی سکتے ہیں اور ایک فارنر نہیں پی سکتا ہے - میں سمجھتا ہوں کہ اس طرح سے ہم اپنے آپ کا مذاق بنا رہے ہیں اور ہندوستان کے خلاف باہر کے ملکوں میں ایک عجیب و غریب قسم کی نفرت پیدا کر رہے ہیں - تو میں یہ سمجھتا ہوں کہ سرکار کو اگر تورزم کو بڑھانا ہے تو باہر کے آئے ہوئے لوگوں کو یہ ساری رعایتیں دینی ہونگی - یہ ٹھیک ہے کہ ہم یہ کہہ سکتے ہیں کہ اس طرح کا لباس پہننا چاہئے لیکن یہ بھی دیکھنا ہے کہ جس لباس میں وہ گھوم سکتے ہیں وہ پہن سکتے ہیں اس کی طرف ہم توجہ ہی نہ کریں -

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAHANARA JAIPAL SINGH): Please finish.

SHRI A. M. TARIQ: I will take another five minutes.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAHANARA JAIPAL SINGH): Please take two minutes at the most. There is a long list of speakers.

شری اے - ایم - طارق : بہر حال- میں دو تین باتیں عرض کروں گا اس بارے میں - اگر سرکار کو تورزم کا بڑھاوا کرنا ہے تو ہمیں اچھے گائیڈس پیدا کرنے چاہئیں - ہماری ہوائی سروس بہت اچھی ہونی چاہئے اور ہوائی جہازوں کا بڑھاوا ہونا چاہئے اور جو اس وقت آپ کے پاس ڈکوٹہ قسم کے ہوائی جہاز ہیں ان کی سروس اس وقت ختم نہیں کرنی چاہئے جب تک کہ آپ سارے ملک میں اچھے ہوائی جہاز نہ رکھیں - تیسری بات یہ ہے کہ اگر آپ کو تورزم کو بڑھانا ہے تو ملک میں اچھے تھیٹر ہوں ، اچھے نائٹ کلب ہوں ، اچھے ریسٹورانٹ ہوں ، اچھی تھکسیاں ہوں -

एक माननीय सदस्य : नाईट क्लब ?

شری اے - ایم - طارق : آپ نائٹ کلب کو کوئی بہت مت سمجھئے - نائٹ کلب ایک ایسی جگہ ہے جہاں انسان دن بھر تھکنے کے بعد دماغی تفریح لیتا ہے - اس کے علاوہ ہر آدمی جو ہندوستان کے باہر بستا ہے لندن میں پیرس میں یا ماسکو میں وہ سب غلذے نہیں ہوتے ہیں - وہ بڑے شریف آدمی ہوتے

ہیں - اور نائٹ کلب میں بے حد شریف آدمی جاتے ہیں - صاحب ذوق جاتے ہیں اور صاحب نظر جاتے ہیں - وہاں ہر ٹکھو خیرہ نہیں جاتا ہے - نائٹ کلب کے معنی چرس خانہ نہیں ہے - نائٹ کلب کے معنی ہیں جہاں آپ کو دماغی تفریح ملتی ہے ، تھکاوٹ کے بعد جہاں آپ کو ذہنی آرام ملتا ہے - جب تک یہ چیزیں ہمارے ملک میں نہ ہوں تب تک توورزم بڑھ نہیں سکتا ہے -]

چوتھی بات جو مجھے آپ کی خدمت میں عرض کرنی ہے وہ یہ ہے کہ میں یہ نہیں سمجھا کہ صاحب ہوٹل سرکار بنائے اور پھر باہر کے لوگوں سے یہ کہے کہ آپ ہوٹل چلائیے - میں اس کے خلاف بے حد پروٹیسٹ کرتا ہوں - ایک ہندوستانی کی حیثیت سے ، ایک ممبر آف پارلیمنٹ کی حیثیت سے اور ایک ایسے آدمی کی حیثیت سے جس کا توورزم سے ذرا تعلق ہے - ہندوستان میں جو لوگ ہوٹل چلاتے ہیں ان کا مقابلہ آپ دنیا کے کسی اچھے سے اچھے ہوٹل چلانے والے سے کر سکتے ہیں - وہ لوگ اپنا روپیہ بھی نہیں لگائیں گے - روپیہ ہماری گورنمنٹ لگائے گی ، ہوٹل بنانے میں اور وہ مینیجمنٹ چلائیں گے - یہ ہندوستان کی توہین ہے - اگر کسی کمیٹی نے ایسی رپورٹ کی ہے یا ایسی سفارش کی ہے تو میں اس ہاؤس سے درخواست کروں گا کہ ایسی سفارش کو فوراً رد کیا جائے - ہمارے ہوٹل والے ہندوستان میں بیٹھکر ہندوستان میں ، پاکستان میں اور تمام ہندوستان میں بڑے بڑے ہوٹل چلا سکتے ہیں چاہے وہ پرائیویٹ سیکٹر کے آدمی ہوں ، چاہے پبلک سیکٹر کے آدمی ہوں یا کسی سیاسی جماعت کے آدمی ہوں لیکن جہاں تک تجربہ کا تعلق ہے بزنس کے معاملہ میں ہم دنیا سے کم نہیں ہیں - یہ اور بات ہے کہ ہمیں وہ تمام سہولتیں میسر نہیں ہیں جو کہ ان لوگوں کو ہیں - تو اس کی طرف سرکار کی توجہ دلانا چاہتا ہوں -

ایک اور پوائنٹ ہے فارن ایکسچینج کا - جس وقت کوئی توورسٹ اس ملک میں آتا ہے - تو ہمیں یہ نہیں معلوم ہوتا ہے کہ اس کے پاس کتنی فارن ایکسچینج ہے وہ کتنی فارن ایکسچینج کی چیکس لایا ہے ڈالرس لایا ہے یا پونڈ لایا ہے - میں یہ سمجھتا ہوں کہ یہ بے حد ضروری ہے کہ کسٹم پر ہی وہ آدمی اپنا فارن ایکسچینج ڈیکلیئر کر دے - اور وہ اس کے پاس پورٹ میں درج کر دیا جائے - اس کے بعد جب وہ واپس جائے تو اس کے پاسپورٹ میں لکھا ہو کہ اس نے فارن ایکسچینج کہاں تبدیل کیا ہے - انہارٹیڈ ڈیلر سے

[شری اے - ایم - طارق]

کیا ہے جو ڈالر کی قیمت چار روپیئے بارہ آنے دیتا ہے یا کسی ایسے آدمی سے تبدیل کیا ہے جو پانچ روپیئے میں ڈالر خرید کر کے واپس امریکہ کو بھیج دیتا ہے -

اس کے ساتھ ساتھ میں جہاں یہ کہتا ہوں کہ اچھے اچھے گائیڈ ہوں اچھے اچھے تھیٹر ہوں وہاں میں کشمیر کے بارے میں یہ کہوں گا کہ ٹورزم میں جتنا پیسہ کشمیر میں خرچ کیا گیا ہے اس کا باقاعدہ حساب ہو - جو لاکھوں روپیہ ان کو دیا گیا ہے اس کا حساب ہونا چاہئیے - آپ نے لائسنسز ہوٹل کے دیے ہیں لیکن اب بھی ہوٹل بنے ہی نہیں ہیں پھر بھی ان کو شراب کے اور چیز کے پرمٹ لائسنس مل گئے ہیں - جب آپ ہوٹل بنانے کا لائسنس دیتے ہیں تو اس میں دو سال ہوٹل بننے میں لگ جائینگے تب تک یہ چیز اور شراب ملنا نے کے لئے فارن ایکسچینج دینا میں سمجھتا ہوں کہ غلط ہے -

(*Interruption*)

یہ آپ کی نگاہ کرم ہے اور اللہ کرے یہ اور وسیع ہو جائے - لیکن اب کچھ نہ کچھ ہم پر بھی ہو جائے - میں آخر میں یہی کہوں گا-

گل پھینکے ہیں اوروں کی طرف بلکہ ثمر بھی -
اے خانہ برانداز چمن کچھ ادھر بھی

†[श्री **ए० एम० तारिक** मैडम वाइस चेयरमैन, मेरे दोस्त ओनरेबल मेम्बर बाजपेयी साहब ने जो मोशन इस हाउस के सामने रक्खा है, मै उसकी ताईद मे खडा हुआ हू , बाजपेयी साहब की इस बडी तकरीर के बाद उन्होंने मेरे लिये कहने को बहुत कम रखा है लेकिन फिर भी ताईद करना मेरे लिये बहुत जरूरी है ।

मैडम वाइस चैयरमैन, जहाट्यूरिज्म के मानी मै समझा हू वो यह है कि मुल्क के रहने वाले लोग दूसरे मुल्क के रहने वाले लोगो के साथ ताल्लुकात बढाए । वो ताल्लुकात सियासी भी हो, समाजी भी हो और इक्तसादी भी हो। ट्यूरिज्म के मानी सिर्फ यह नही है कि बाहर से आए हुए लोगो से हम फोरेन एक्सचेज की सूरत मे दौलत कमाये । टूरिज्म के मानी यह भी है कि वो लोग जो इस मुल्क मे ट्यूरिज्म की सूरत मे माली इमदाद देना चाहते है जब वो हिन्दुस्तान से वापिस जाये तो उन्हें एहसास हो कि वो एक अच्छे मुल्क से, एक बढते हुए मल्क से, एक एसे मुल्क से जिसके पीछे एक बहुत बडी तारीख है, वापिस जा रहे है । उन्हें इस बात का एहसास न हो कि वो ऐसे मल्क मे आये हैं जो शायद अभी उनके मुल्क से दो सौ, तीन सौ साल पीछे है । इसके लिये इस चीज की जरूरत है वो लोग वज़ीर हो, ताजिर हो, या और लोग हो, जिनका ट्यूरिज्म से ताल्लुक है, उसमे शौक पैदा किया जाए और बाहर से आने वाले लोगो के साथ अच्छा सलूक पैदा कर सके । इस मल्क को पैदा करने के लिये सरकार को बहुत कुछ करना है और सरकार को बहुत कुछ करना चाहिये । मैं समझता हू इस मकसद को पशेनजर रखते हुए सरकार ने जो कमेटी बनाई है, उस कमेटी की रिपोर्ट १६ सितम्बर को इस एवान मे रक्खी गई । जहा तक इस रिपोर्ट का ताल्लुक है मुझे इससे इख्तलाफ है कि इस मल्क मे इस ट्यूरिज्म को कारपोरेशन की शक्ल

†[ ] Hindi Transliteration.

देने से पेश्तर इन मसलो की तरफ तवज्जो देनी चाहिये। इस रिपोर्ट को बनाने के बारे मे मै एवान की तवज्जो दिलाना चाहता हू कि जिन्होने इस रिपोर्ट को बनाया है, जिनके हाथ मे यह काम सौपा गया है वो सरकार को एक ऐसी रिपोर्ट पेश करे जो ट्यूरिज्म के बारे मे सरकार कोई काम कर सके। मैं नही समझता उनमे से कोई भी साहब ऐसे है जिनको जाती तौर से या दफ्तरी तौर से ट्यूरिज्म से जरा भी ताल्लुक है। यह ठीक है कि ये लोग बहुत बडे बडे अफसर है सरकार के बडे बडे सेक्रेटरी है और मैं समझता हू कि वजारत मे इन बडे बडे अफसरों को और सेक्रेटरियो को खुश करने के लिये इसमे रक्खा है। लेकिन जहा तक इस कमेटी का ताल्लुक है ट्यूरिज्म एक इसान और दूसरे इसान के मिलने मे पैदा होना है। असल मे ये पब्लिक रिलेशन है, उनमे वही लोग है जो आम से बहुत दूर बसते है, जो दिन भर दफ्तरो मे कलम घिस घिस कर थक जाते है और शाम को किसी मेहमान की हैसियत से क्लबों मे जाते है, उनमे से शायद ही कोई ऐसा हो जिनको कभी टैक्सी की जरूरत पड़ी हो और जो कभी किसी आरडनरी रेस्टोरेट मे जाते हो, जिन्हे कभी भी कस्टम मे चार पाच घट खडे होने का इतफाक हुआ हो, जिनको हवाई जहाज का टिकट न मिलता हो, जिन्हे रेलवे की सीटें मागने पर उनसे यह कहा जाय कि तुम्हारा नाम सातवे नम्बर पर है, शायद उनमे से कोई एसे साहब हो जिन्हे ये तमाम तकलीफे उठानी पडी हो। अगर कोई होटल मे रहना चाहता है तो उनसे कहा जाता है कि तमाम होटल बुक्ड है। ये वो लोग है जिनको यह कह सकते है कि आसमान से उतरे है और जमीन उनके लिये जन्नत बन गई है। तो इस तरह के लोग आम लोगो की तकलीफो को किस तरह महसूस कर सकते है। तो मैं सरकार की तवज्जो इस तरफ दिलाऊंगा कि जब भी कमेटी बनानी है तो वजन बराबर रखना है जैसे शेर मे मिसरा पुरा करने के लिये। तो ऐसी कमेटियो मे ऐसे शख्सो को रक्खा जाता जिनका ट्यूरिज्म से ताल्लुक रहा होता। कोई ट्रान्सपोर्ट का आदमी होता, कोई होटल चलाने वालो का रिप्रजेन्टेटीव होता, काश्मीर के हाउस बोट ओनरों का रिप्रेजेन्टेटिव होता, पहाडो मे जिनके छोटे मोटे होटल है उनका रिप्रेजेटेटिव होता ऐसे लोग होते जिनको कस्टम मे छ छ घटे तक खडा होना पडता है तो ऐसे लोगो को कमेटी मे लिया जाएगा तो वो सही शक्ल बतला सकेगे। इसलिये मै सरकार से दरख्वास्त करता हू कि ये चीज़ बेहद जरूरी है कि अगर सरकार वाकई इस मुल्क मे ट्यूरिज्म को बढाना चाहती है तो उसके लिये एक कमेटी बनाई जाए और उसमे ऐसे लोगो को लिया जाय जिनका वाकई ट्यूरिज्म के मामले से कुछ न कुछ ताल्लुक हो, जो इसकी तकलीफो को जानते हो।

जहा तक बाजपेयी साहब ने कहा है मैं उनकी बातो की ताईद करता हूं। मेरा ख्याल है कि हम जब ट्यूरिज्म की बात करते हैं तो आपको यह मालूम होना चाहिये। मैंने अखबार मगाया था, पता नही कहा है, ये स्टेट्समैन है जिसके बारे मे यह कहा जा सकता है कि वो न राइट है न लेफ्ट है लेकिन एक अच्छा अखबार है वो जो कुछ कहेगा हाउस उसकी ताईद करेगा। उस अखबार ने एक खबर ट्यरिस्ट गाइड के बारे मे छापी है जिसको मैं आपके सामन रखना चाहता हूं। जिस अजीम-ओ-शान मुल्क मे ऐसे ट्यूरिस्ट गाईड इसान मौजूद हो जिनको यह मालूम नही है कि कुतबमीनार और अशोकालाट मे कितना फर्क है, ताजमहल और लाल किला मे कितना फासला है, राज बहादुर और तारिक मे से वज़ीर कौन है, ऐसे लोग मुल्क में ट्यूरिस्ट कारपोरेशन बनाना चाहते हैं। बाहर के लोगो से दरख्वास्त की जाती है कि आप तशरीफ लाइये और हमारा होटल चलाइए। मै हुकूमत की तवज्जो और वजीर साहब की तवज्जो इस बात की ओर दिलाना चाहता हूं कि जब तक हम इन छोटी छोटी

[श्री ए० एम० तारिक]

बातों को और बुनियादी बातों को ठीक नहीं कर सकते हैं तब तक हम इस मुल्क मे ट्यूरिज्म को बढ़ावा नहीं दे सकते हैं। मैंने हुकूमत की मेहरबानी से और पार्लियामेंट के करम से कुछ बाहर के मुल्कों का दौरा किया है। मेरे साथ वज़ीर साहब भी थे, ट्रांसपोर्ट एंड कम्यूनिकेशन वज़ारत के सेक्रेटरी मिस्टर फिलप्स भी थे और बहुत से लोग थे। जब हम लोग टोकियों में गए तो जब हम टोकियो शहर में बस में बैठ कर सैर कर रहे थे तो उस में कमन्टेटर मौजूद था और उसकी कमेंटरी से यह महसूस होता था कि ये दरोदीवार बोलते हैं और अपनी तारीफ करते हैं और अपनी तारीख बतलाते हैं और लोगों को दावत देते हैं कि हम को देखिये। जब ऐसे मुल्क में गाइड से वासता पड़ता है तो माफ कीजिए ऐसा मालूम होता है कि किसी आदमी को दवाई के जरिये जिन्दा किया गया है और उसने बोलना भी शुरू कर दिया है। उस को यह मालूम नहीं कि जब वो फौत होंगे तो दुनिया काफी बदल चुकी होगी। तो ऐसे लोगों को गाईड बनाना और फिर यह कोशिश करना कि हम दुनिया के मुल्कों के सामने खड़े हो जायें ठीक मालूम नहीं देता है।

जहां तक हमारे इरादों का ताल्लुक है, जहां तक हमारे अम्न का ताल्लुक है, यह जरूरी है कि हमें तरक्की करनी है लेकिन तरक्की करने के लिये जो बुनियादी चीजें हैं उनको हम नजर अन्दाज नहीं कर सकते हैं। ट्यूरिज्म के मानी सिर्फ ये नहीं हैं कि हम बड़ी बड़ी कान्फ्रेंसें करें और दुनिया के बड़े बड़े लोगों को यहां बुलायें। ट्यूरिज्म के मानी यह हैं कि हम अपने लोगों में इस बारे में शौक पैदा करें, उनमें एजूकेशन बढ़ाएं और इसके बारे में बाकायदा तालीम दें। ट्यूरिज्म के मानी यह भी हैं कि जब हम लंडन के कस्टम में पहुंचते हैं, जब हमारा सामान खोला जाता है तो खोलने के बाद तय करके हमारे सूटकेस मे रख दिया जाता है। हिन्दुस्तान मे कस्टम वाले किसी बाहर के आदमी का या हिन्दुस्तान के आदमी का सामान जब खोलते हैं तो फिर उसी आदमी को खुद अपना सामान बन्द करना पडता है और इसमें कई घंटे सर्फ करने पड़ते हैं, तो इन सब चीजों की तरफ सरकार को तवज्जो करनी चाहिये।

जहां तक शराब का जिक्र किया गया है मैं बाजपेयी साहब का शुक्रिया अदा करना चाहता हूं कि वो काफी बदल गए है और मुझे उम्मीद है वो इसी तरह से बदलते रहेंगे। उन्होंने शराब की तारीफ के बारे में जो बात कही मैं खुले दिल से इसकी ताईद करता हूं कि गैर मुल्क के सय्याहों के लिये शराब खोल दी जानी चाहिये। मैं भी इसकी ताईद करना चाहता हूं। इसमें कोई शक नहीं कि मेरे मजहब में शराब पीना हराम है। मुझ पर हराम है, मैं नहीं पीता लेकिन मैं यह कैसे कर सकता हूं और कैसे किसी शख्स को रोक सकता हूं जब वह शराब पीना चाहता है जिसके लिये कि शराब खुराक का एक हिस्सा है। गैर मुल्क में शराब को लोग सिर्फ इस लिहाज से नहीं देखते जिस लिहाज से हिन्दुस्तान के लोग देखते हैं। उनके लिये तो शराब जो है वह खुराक का एक हिस्सा है। जब तक उनकी टैबल पर, डिनर टेबल पर, लंच के वक्त, कोई वाईन, एपटाईज़र, बीयर न हो, जिन न हों, तो उन लोगों की खुराक पूरी नहीं होती।

एक माननीय सदस्य : ये नाम आप कैसे जान गये।

श्री ए० एम० तारिक : ये आपकी सोहबत का असर है। अगर मैं पी नहीं सकता तो नाम तो याद रख सकता हूं। तो मैं समझता हूं कि इस तरह की पाबन्दी नहीं लगानी चाहिये। अगर मैं लंदन जाता हूं और मुझे यहां वेजेटेरियन फूड न मिले तो मुझे तकलीफ होगी।

श्री प्रकाशनारायण सप्रू : आप वैजेटेरियन फूड पसन्द करते हैं ?

श्री ए० एम० तारिक : नहीं साहब मैं तो नानवैजेटेरियन हूं । हम लोगों को कोई तकलीफ नही होती है दुनिया में । तकलीफ तो होती है वैजैटेरियनस को । इसी लिये मैं अर्ज कर रहा हूं कि जब हमें खुद इस बात का एहसास होता है कि हमारी मतलब की खुराक लंदन और पैरिस वगैरह में नहीं मिलती है और हम भाग कर आते है और हम में से बहुत से लोग ऐसे हैं जो अपना प्रोग्राम खत्म करके वहा से जल्दी भागना चाहते हैं, तो हमको यह भी देखना चाहिये कि ये बाहर के लोग जो यहां आना चाहते हैं हम उन पर इस किस्म की पाबन्दियां नहीं लगा सकते । दुनिया में ऐसा कोई, अखलाकी कानून नही है जिसके तहत हम किसी शख्स की खुराक पर पाबन्दियां लगायें कि आप हमारे मुल्क में ये खा सकते है, यह नही खा सकते हैं, यहां खा सकते हैं, वहां नहीं खा सकते हैं । आपको शायद इस बात का एहसास नहीं है लेकिन उन लोगों को है जिसका कुछ न कुछ उन लोगों से उठना बैठना होता है । हम तो क्लब में बैठकर शराब पी सकते हैं, होटल में बैठकर शराब पी सकते हैं और एक फारेनर नहीं पी सकता है । मैं समझता हूं कि इस तरह से हम अपने आप का मज़ाक बना रहे हैं और हिन्दुस्तान के खिलाफ बाहर के लोगों में एक अज़ीबो-गरीब किस्म की नफरत पैदा कर रहे है । तो मैं यह समझता हूं कि सरकार को अगर ट्यूरिज्म को बढ़ाना है तो बाहर के आए हुए लोगों को ये सारी रियायतें देनी होंगी । यह ठीक है कि हम यह कह सकते हैं कि इस तरह का लिबास पहनना चाहिये लेकिन यह भी देखना है कि जिस लिबास में वे घूम सकते है, वो फिर सकते है इसकी तरफ हम तवज्जो ही न करें ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAHANARA JAIPAL SINGH): Please finish.

SHRI A. M. TARIQ: I will take another five minutes.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAHANARA JAIPAL SINGH): Please take two minutes at the most. There is a long list of speakers.

श्री ए० एम० तारिक : बहरहाल मैं दो तीन बातें अर्ज करूंगा इस बारे में । अगर सरकार को ट्यूरिज्म का बढ़ावा करना है तो हमें अच्छे गाइड्स पैदा करने चाहियें । हमारी हवाई सर्विस बहुत अच्छी होनी चाहिये और हवाई जहाजों का बढ़ावा होना चाहिये । और जो इस वक्त आपके पास डैकोटा किस्म के हवाई जहाज हैं उनकी सर्विस इस वक्त खत्म नही करनी चाहिये जब तक कि आप सारे मुल्क मे अच्छे हवाई जहाज नहीं रक्खें । तीसरी बात यह है कि अगर आपको ट्यूरिज्म को बढ़ाना है तो मुल्क में अच्छे थियेटर हों, अच्छे नाईट क्लब हो, अच्छे रेस्तरां हों, अच्छी टैक्सियां हों ।

एक माननीय सदस्य : नाईट क्लब ?

श्री ए० एम० तारिक : आप नाईट क्लब को कोई भूत मत समझ लीजिये । नाईट क्लब एक ऐसी जगह है जहां इंसान दिन भर थकने के बाद दिमागी तफरीह लेता है । इसके अलावा हर आदमी जो हिन्दुस्तान के बाहर बसता है, लन्दन में, पेरिस मे या मास्को में, वो सब गुण्डे नहीं होते है, वो बड़े शरीफ आदमी होते है और नाईट क्लब में बेहद शरीफ आदमी जाते हैं । साहिबेजौक जाते है और साहिबेनज़र जाते हैं । वहां हर नत्थूखैरा नहीं जाता है । नाईट क्लब के मानी चरसखाना नहीं है । नाईट क्लब के मानी हैं जहां आपको दिमागी तफ़रीह मिलती है, थकावट के बाद जहां आपको जहनी आराम मिलता है । जब तक ये चीजें हमारे मुल्क में न हों तब तक ट्यूरिज्म बढ़ नहीं सकता है ।

चौथी बात जो मुझे आपकी खिदमत में अर्ज करनी है वो यह है कि मैं यह नहीं समझा कि साहब होटल सरकार बनाये और फिर

[श्री ए० एम० तारिक]

बाहर के लोगो से कहे कि आप होटल चलाइये। मैं इसके खिलाफ बेहद प्रोटैस्ट करता हू एक हिन्दुस्तानी की हैसियत से, एक मेम्बर आफ पार्लियामेट की हैसियत मे और एक ऐसे आदमी की हैसियत से जिसका ट्यूरिज्म से जरा ताल्लुक है । हिन्दुस्तान मे जो लोग होटल चलाते है उनका मुकाबिला दुनिया के किसी अच्छे से अच्छे होटल चलाने वाले से कर सकते है । वो लोग अपना रुपया भी नही लगायेगे, रुपया हमारी गवर्नमेट लगायेगी होटल बनाने मे और वो मैनेजमेट चलायेगे । ये हिन्दुस्तान की तौहीन है । अगर किसी कमेटी ने ऐसी रिपोर्ट की है या ऐसी सिफारिश की है तो मै इस हाउस से दरख्वास्त करूगा कि ऐसी सिफारिश का फौरन रद्द किया जाये । हमारे होटल वाले हिन्दुस्तान मे बैठ कर हिन्दुस्तान मे पाकिस्तान मे, और तमाम हिन्दुस्तान मे बडे बडे होटल चला सकते है चाहे वो प्राइवेट सैक्टर के आदमी हो, चाहे पब्लिक सेक्टर के आदमी हो या किसी सियासी जमायत के आदमी हो। लेकिन जहा तक तजुर्बे का ताल्लुक है बिजनेस के मामले मे हम दुनिया से कम नही है । ये और बात है कि हमे तमाम सहूलियते मुयस्सर नही है जो कि उन लोगो को है । तो इसकी तरफ सरकार की तवज्जो दिलाना चाहता हू ।

एक और प्वाइट है फौरन एक्सचेंज का । जिस वक्त कोई ट्यूरिस्ट मुल्क मे आाता है तो हमे यह नही मालूम होता है कि उसके पास कितनी फारेन एक्सचेज है । वो कितनी फोरेन एक्सचेज की चेक्स लाया है, डालरस लाया है, या पौण्डस लाया है । मैं यह समझता हू कि .ये बेहद जरूरी है कि कस्टम पर ही वो आदमी अपना फोरन एक्सचेज डिक्लेयर कर दे और वो उसके पासपोर्ट मे दर्ज कर दिया जाये । इसके बाद जब वो वापिस जाये तो उसके पास पासपोर्ट मे लिखा हो कि उसने वो फोरेन एक्सचेज कहा तबदील किया है। आथराइज्ड डीलर से किया है जो डालर की कीमत चार रुपये बारह आने देता है या किसी ऐसे आदमी से तबदील किया है जो पाच रुपये मे डालर खरीद करके वापस अमरीका को भेज देता है ।

इसके साथ साथ मै जहा यह कहता हू कि अच्छे अच्छे गाईड हो, अच्छे अच्छे थियटर हो वहा मै कश्मीर के बारे मे यह कहूगा कि ट्यूरिज्म मे जितना पैसा कश्मीर मे खर्च किया गया है उसका बकायादा हिसाब हो । जो लाखो रुपया उनको दिया गया है उसका हिसाब होना चाहिये । आपने लाइसेसेज होटल के दिये है लेकिन अब भी होटल बने ही नही है फिर भी उनको शराब के, चीज के, और फिश के लाइसेन्स मिल गये है । जब आप होटल बनाने का लाइसेन्स देते है तो उसमे दो साल होटल बनने मे लग जायेगे तब तक ये चीज़ और शराब मगाने के लिये फोरेन एक्सचेज देना, मै समझता हू कि गलत है और ज़ुल्म है ।

(Interruption)

ये आपकी निगाहकर्म है और अल्लाह करे ये और वसीह हो जाये लेकिन अब कुछ न कुछ हम पर भी हो जाये । मैं आखिर मे यही कहूगा —

गुल फेंके है औरो की तरफ,
बल्कि समर भी।
ए खाना बरअन्दाज चमन,
कुछ तो इधर भी ।

SHRI M S OBEROI (Bihar): Madam Vice-Chairman, I rise to support the motion now before the House. This Report of the *Ad Hoc* Committee on Tourism which is popularly known as the Jha Committee's Report is the most important document that has emerged, in so far as the tourist industry is concerned The Committee has examined numerous problems But one of the major recommendations which have been made by this Committee is the formation of a corpora-

tion on the lines of joint stock companies. In my turn, I will mainly deal with this important issue having in view the short time which I have at my disposal.

An analysis of the trend of foreign tourists' arrivals in India shows that there has been a decline of 3.9 per cent. in 1962. But if you see the entire picture of the tourist traffic coming from the various countries, the position is quite different. I am giving you these quotations from one of the articles which appeared in the Press some time ago. According to my thinking, there has not been any decline in the number of foreign tourists during this period. The Report which has been prepared reveals that there has been a big fall in the tourist traffic and that for that very reason, a corporation should be set up and that the hotels should be built in India and that an amount to the extent of Rs. 22 crores should be spent for this purpose. Well, we have got to see whether there has been any decline in the number of tourists, but when there has been no decline in the number of tourists, where was the necessity of spending Rs. 22 crores to build hotels all over the country? Well, that shows that the decline was not due to the shortage of accommodation. But the decline was very small, which was due, I should say, to the emergency which arose. It was on account of the emergency that that small decline was there but it was not due to the fact that there was a big shortage of accommodation. But they say that it was mainly due to the shortage of accommodation, that a corporation should be set up and Rs. 22 crores should be spent on building these hotels. Well, in support of my view, I would place before you the following figures. Western Europe sent more tourists to India than other areas, the foreign tourists from this region accounting for 28.1 per cent in 1962 as against 26 to 27 per cent in the previous years.

SHRI RAJENDRA PRATAP SINHA (Bihar): May I intervene for a moment to get a clarification? If you refer to Appendix II of the Report of the *Ad Hoc* Committee on Tourism, you will find that statistics of tourist arrivals in India have been given. From Western Europe, in 1961, 38,268 people came, whereas in 1962, 37,740 people came.

SHRI M. S. OBEROI: Yes, I am coming to that; where has been the fall, I will tell you. And that fall is not so important. (*Interruptions*) I am just coming to the countries where there has been a fall, and that is not so important because, if there is a fall, it is on account of the emergency. But the countries which bring us more tourists, they were not at all affected. Now if I give you those figures it will be very clear to you. There was an increase in the number of tourists in the high-spending category. It is the United States of America the increase was from 82,038 in 1961 to 83,318 in 1962. The number of North American tourists—35,075 in 1962—was double that of 1957.

SHRI RAJENDRA PRATAP SINHA: Where are these figures?

SHRI M. S. OBEROI I am giving you these figures; you will find them somewhere. The Tourist Department is well aware of these statistics.

SHRI RAJENDRA PRATAP SINHA: But they say that it is not so much; they say that in 1961 it was 33,268 from Canada and the U.S.A. and it rose in 1962 to 35,075.

THE MINISTER OF SHIPPING IN THE MINISTRY OF TRANSPORT (SHRI RAJ BAHADUR): That is right.

SHRI RAJENDRA PRATAP SINHA: But you say that it was 82,038 in 1961 and 83,318 in 1962. Where are you getting these figures from?

SHRI M. S. OBEROI: Well, I will support these figures. The number of North American tourists—35,075

[Shri M. S. Oberoi.]

in 1962 was double that in 1957. Is it not correct?

SHRI RAJENDRA PRATAP SINHA: That is correct.

SHRI M. S. OBEROI: Tourists from the United States formed the largest nationality in 1962—24·7 per cent of the tourists. The increase in the number of tourists from South America since 1957 has been three fold, having risen from 536 in 1957 to 1593 in 1962. Tourists prefer to make Delhi the point of arrival rather than Calcutta or Bombay. Visitors disembarking at Palam and Safdarjung increased from 21,946 in 1960 to 31,650 in 1962. Delhi is the most important city and you can see from these figures whether there has been a decline or an increase. These are the figures which nobody can conceal. If there was any decline, it was, I should say, a small percentage, *i.e.* 19 per cent from Africa and 22 per cent from East Asia and some drop from Europe; but not from Western Europe; as a matter of fact there has been an increase from Western Europe.

Now coming to hotel accommodation, if you take into consideration the expenditure over tourism and the earning of foreign exchange from the same source, there has been an increase in terms of percentage. The increase was 5.5 per cent in 1961-62 as against 5.4 per cent in 1960-61 and 4.4 per cent in 1959-60. So the foreign exchange earning has been on the increase as compared to the expenditure incurred on tourism. So, it is apparent that there has been a small decline, but I again repeat that the decline in the number of tourists is not due to shortage of accommodation but more or less due to other causes. The Government of India has mentioned in their report the incentives they have given to the hotel industry. I accept it, that these incentives have been very beneficial; without these incentives the hotel industry could not have advanced, thanks to the hon. Minister, Shri Raj Bahadur, who has taken a personal interest in getting these incentives, and it is on account of these incentives that there has been a big advancement in the hotel industry itself. Now what are those incentives? The incentives are—the report mentions them— release of foreign exchange for the import of essential equipment, loans from the Industrial Finance Corporation and State Finance Corporations, and income-tax exemption for new hotels. These incentives, as I said before, have been very very helpful. This Committee in its report observes that the Tourist Department estimates that to provide the additional hotel accommodation required to cope with the anticipated growth in tourist traffic about twenty crores of rupees would have to be invested in the next five years. The report further says that it is extremely doubtful—this is very important for the House to mark—whether private enterprise can find the estimated capital and adds "that private enterprise is more likely to concentrate on luxury hotels rather than on smaller and modestly-priced hotels, and that the public sector will therefore have to play a major role in providing additional hotel accommodation." The history of the private sector shows that in the last five years and in the coming five years they are making an investment of about fifteen crores. They have already spent about seven to eight crores of rupees on the hotels which have already been built. They have also plans and arrangements to the extent of another seven to eight crores for the hotels to come up in the private sector in the next five years. I would like to know how the Government has come to the conclusion that the private sector is not capable of providing the finance for building these hotels in India. When I say that seven to eight crores of rupees have been spent on the hotels already, I mean that this investment covers the big cities, like Delhi, Calcutta, Agra, Ahmedabad and Bombay. Now in Delhi alone the industry have spent Rs. 3,55,00,000. In Calcutta the

hotels have schemes in hand, and they are spending to the tune of Rs 4,50,00,000 In Agra a hotel has come up with 100 rooms costing Rs 50,00,000 In Ahmedabad a hotel has come up with 50 rooms with a capital of Rs 25,00,000 In Bombay Hotel-Natraj has come up at a cost of Rs 65,00,000 Also another hotel, the Sun-N-Sand, with 100 rooms has come up in Bombay at a cost of Rs 50,00,000 Again in Bombay a project to build a new hotel with 400 rooms is going to be launched for which the financial arrangements are readily avai it will cost about Rs 4,00,00,000 All this shows that the private sector has an investment to the tune of about fifteen crores of rupees, which they have already spent in part, and are going to spend the balance in the next five years Now the list which appears in this report is for the few hotels which have still got to be built in some places in India Well, if you take the list of these hotels, you do not need more than 700 rooms These 700 rooms will hardly cost about 2½ crores It should not be difficult for the Government to assist the hotel industry to find this sum of Rs 2½ crores Half the amount will be found from the Industrial Finance Corporation and the State Finance Corporation, and for half the amount, about Rs 1½ crores, if the Government puts in a revolving fund to the tune of that amount and advance that amount against the security of 50 per cent as a second mortgage on these hotels on which the loan has been advanced to the Industrial Finance Corporation, there should be no difficulty in building these hotels in the private sector

Coming to the private sector and public secor—I would like to draw the attention of the hon Minister—

SHRI RAJ BAHADUR Thank you I am sorry

SHRI M S OBEROI About the public sector and the private sector I have got to say only a few words This question of public sector and private sector arose in 1956 The hon Minister, then Sardar Swaran Singh, made the following statement That was, of course, in connection with the Ashoka Hotel, but that gave out the laid down policy of the Government as to what policy they were going to pursue It is surprising that the Government forgets their undertakings or policies Even if the Minister makes a statement on the floor of the House, sometimes it is forgotten, intentionally or unintentionally Whatever happens it appears that more or less it is not put into practice It reads —

> "Doubts have been raised about the capacity of Government to run the hotel I may straightaway say that it is not the intention of the Government to enter into this hotelier business in any big way, but in this particular case having been convinced that there was a necessity for having a first class hotel and having exhausted all steps that could reasonably be taken to attract private capital, Government had no option but to step in and put in the money with this precaution that the controlling interest in it was acquired by the Government"

It shows very clearly that the Government had absolutely no intention to come into the picture to build hotels in the public sector Now a very important report which was submitted by the Estimates Committee the same year in October, 1956 says —

> "That the Committee are definitely of the opinion that the hotel industry is preeminently suitable for the private sector and that the public sector should not encroach upon this sphere"

I am sure the hon Minister in reply to my contention will say that the public sector is not going to run the hotels, that the public sector is only going to build hotels I know it from the practical side as to what will happen At that time, when the hotels are built, Rs 25 crores have

[Shri M. S. Oberoi.]

been spent, the Government will invite tenders, or they will do it by auction. Then what will happen? It will go very high in auction or in tenders. The result will be that the hoteliers have got to raise their room rates, thereby the whole object of earning the foreign exchange is lost. When there is bound to be an increase in rates, do you think people from other countries will not object to these high rates as compared to other countries in the world? I am sure not less than Rs. 60 to Rs. 70 per day for the Single Room will be the rate for these hotels.

SHRI P. N. SAPRU: What is the rate per diem in Delhi, Calcutta, Bombay or the Grand Hotel?

SHRI M. S. OBEROI: It is Rs. 50 per day including meals.

SHRI P. N. SAPRU: Is that not very big for the private sector?

SHRI M. S. OBEROI: What has happened in Bombay? A piece of land was to be given to build a hotel. Tenders were invited. On the tenders the land went up to—you will not believe—Rs. 2,650 a sq. yard.

SHRI RAJ BAHADUR: Whose bid is that?

SHRI M. S. OBEROI: Why has it gone so high? Because the Government has asked for tenders. The result was that all the State agents got together. Out of the five tenders there was only one hotelier. All the others were estate agents. They wanted to get hold of that land and use it for purposes other than probably a hotel. So, a hotelier gave a high tender to save this hotel project from the hands of certain speculators. It was only with that idea that the price of the land went up so high as that. With all that, still the hotel will come up and I can assure the hon. Minister that if it is properly built, as it should be built, if one knows how to build, still the rates will be maintained, not high but parallel to other hotels during that time.

Now coming to my point, the hon. Minister will say in reply that when these hotels are ready, the Government will not run them. It will go to the private operators. And what will be the advantages and disadvantages?

I will read out how the mind of the Government is working as far as foreign operators are concerned. The Jha Committee says:—

> "It would be preferable to entrust day to day operation and management to State-owned hotels, to hotel operators, Indian or foreigners—the latter would have the advantage of helping to attract tourists through their international contacts."

So what will happen? These Government built hotels will not go to private operators but foreign operators will be invited and they will be entrusted with the running thereof. What does the Hotel Standards and Rate Structure Committee say? I would like to read out this extract to you and then you will know how the mind of the Government on foreign operators works. It says:—

> "It has been brought to our notice that some of the hotel interests abroad are interested in building and operating hotels in India. The Committee wishes to record its opinion that it has been struck by the manner in which profits made by the hotel industry in India since the advent of independence have been, generally, ploughed back into it in order to improve hotel standards and to build new and modern hotels. What is needed in the opinion of the Committee is not the advent of foreign operators but the giving of every kind of encouragement and assistance to Indian operators who have proved themselves to be competent in the building and running of modern hotels. The

Committee does not think that it would be proper to permit foreign operators to establish themselves in india. It is strongly of the opinion that it welcomes any financial assistance from foreign countries in the same manner as provided for in other industries in India, as well as from institutions like the World Bank, the Import and Export Bank and the like. It would definitely be detrimental to the interest of the Hotel Industry to permit the establishment of foreign operators for which step the Committee finds neither justification nor necessity whether in the public or the private sector."

4 P.M.

There can be no better report than this which has been submitted by the Hotel Rates Structure Committee and this has been accepted by the Government of India and on the face of it, the same Government are still thinking of inviting foreign operators to come to this country. Well, if you still prefer, if you still want foreign operators to come to India, let them come forward and collaborate with the Hotel Operators in India so that the management at least remains in the hands of the Indian operators. We do not object to that even. At the same time let them make an investment. It may not be that the investment should be entirely of India, entirely of Indian capital and they should be only asked to invest 15 or 20 per cent. Let them bring 49 or 50 per cent. We have 50 per cent. That is very fair and square but if you want to bring foreign operators here only with 20 or 25 per cent. investment, I think it is very unfair to this industry.

SHRI AKBAR ALI KHAN (Andhra Pradesh): Why do you apprehend that the Government is thinking of bringing foreigners for this purpose?

SHRI M. S. OBEROI: They have said so in their report.

SHRI AKBAR ALI KHAN: In this report I do not see that.

SHRI M. S. OBEROI: They say that they would give preference to the foreign operators. Why? It is because these hoteliers will have long contacts and they do long promotion. That is all the reason given. I would like to know this. The hoteliers do not generate business. They do not promote business or do publicity. It is the travel agents and the air lines that generate business.

SHRI RAJ BAHADUR: Do I take that he is against foreign collaboration in the hotel industry?

SHRI M. S. OBEROI: No, I am not against it. If at all you bring foreign operators, let them not come with substantial investments. Let them come on those lines or on those agreements which the Government of India has already accepted. There has been an agreement which has already been accepted for foreign collaboration. I myself have collaborated in one of the companies. What is that collaboration? This collaboration is to know a little bit of know-how but the management remains in the hands of Indians.

SHRI AKBAR ALI KHAN: Will you not admit that the Swiss have developed it as a technique?

SHRI M. S. OBEROI: Why only the Swiss? The Americans, Italians, they also know the know-how and they are good operators. I shall have no objection to that but for God's sake, do not give them further concessions. Let those concessions be limited only to those which the Government of India have already agreed to. The Collaboration Committee of the Government of India have already come to certain decisions that if there is going to be certain collaboration, it will be on those lines. Why should new incentives be given to any other foreign operator by giving more facilities than otherwise have been given

[Shri M S Oberoi]

already? With these remarks I support the motion

SHRI A D. MANI (Madhya Pradesh). Madam, the report of the *Ad Hoc* Committee on Tourism would have been a far more valuable document if non-officials had been included on the Committee As the House is aware, the Committee consisted of officials only and it is natural, therefore, that they should have come to the conclusion that the expansion of the hotel enterprise in India can only be in the public sector I do not agree with my friend, Mr Oberoi, that there has been a decline in the tourist traffic. He is perhaps right in saying that there has been increase of tourists compared with the figures of 1957 but there has been a decline in the tourist traffic from 1960 to 1961 in terms of percentage over the figures of the preceding years This should cause us some concern but there is no point in false parallels being cited as for example that Britain earned 576 millions or about 274 crores from the tourists The fact of the matter is—and I am very sorry to say—that India is not Britain We do not have those attractions for the foreign visitor which Britain has, neither do we have the attractions of Italy which has got its architectural monuments, its romantic parts, its cultural heritage from the middle ages We do not have all these advantages but still it is a matter of satisfaction that the categories of tourists from the various parts of the world like Western Europe, the U S A and South America have been increasing during the years from 1957 up to the present time I would like to say in regard to the suggestion made by the Committee that a Corporation should be set up to enable the hotel enterprise to expand in the public sector, that I am not in favour of their recommendation I do not think that the Indian hotel industry has been given a fair trial My friend, Mr Oberoi, himself would tell the House, if some questions are put to him, that even in regard to the construction of his hotel in Delhi which has not yet been completed, he has not received the necessary foreign exchange and co-operation in the matter of supply of articles necessary for the construction of the hotel It may be that there is a shortage of cement or steel The fact of the matter is that building construction has suffered a setback in our country

SHRI RAJ BAHADUR: Has he made that complaint?

SHRI A D MANI: I am asking him because

SHRI RAJ BAHADUR He has not made that complaint

SHRI M S OBEROI No

SHRI A D MANI But you are not building it quickly Shortages are there

SHRI M S OBEROI That may be because of certain procedural delays

SHRI RAJ BAHADUR We have gone out of our way to help the hotel industry in regard to all these items of short supply.

SHRI M S OBEROI There I accept, but procedural delays or administrative delays are there

SHRI A D MANI He has mentioned it as administrative delay I have talked to him about his personal difficulties and that is why I am expressing it on the floor of the House I would like to say that the private sector must be given a chance of expanding the hotel industry by generous assistance from the L I C and the State Bank of India If the Government of India were to give a policy directive to the State Bank to afford credit and overdraft facilities for the construction of hotels, it might be possible for the private hoteliers to come into the field and construct more hotels I do not think, as long as the steel industry has not been a substantial success in our country, the Government can come forward and say

that they are going to run the hotels also. They have not made a conspicuous success of departmental catering, for example, on the Railways. In a matter like this at least in the matter of culinary art . . .

DR. A. SUBBA RAO (Kerala): Neither has the private sector made . . .

SHRI A. D. MANI: You go to the private sector and you get better food than in the Railway restaurants. In any case the private sector should be given an opportunity in this field where it can show initiative which may not be within the range of departmental officials or those officials who have to man the public corporations.

A reference was made to the policy of prohibition which has been followed in the States. No greater damage has been done to our prospects of tourist traffic than that unfortunate Frederick March incident in the South when a film actor was arrested for possession of about three ounces of brandy. That arrest got a very bad publicity for us in the American Press that incident took place in 1959-60—and I am not correlating the fall in the traffic to what happened there—but there seems to be some kind of a connection between the Frederick March incident and the decline in the tourist traffic. It is too late for us to advise the Government to give up prohibition. Rightly or wrongly, the Congress Party which is the ruling party in the country, has accepted prohibition as a more important plank in its programme than even the setting up of steel plants. As long as that is the policy of the Congress Party and the party in power, we can do nothing more about it excepting to complain but it is possible for the Minister to advise the State Governments not to ask for any kind of permit from a person who comes for a six months' sojourn in the country on a foreign passport. Any person coming with any foreign passport should be regarded as a tourist. He need not necessarily come for sightseeing. A person holding a foreign passport, with a visa endorsed by us, for a limited duration of stay should be allowed to get his drinks without any kind of restriction or without seeking the permission of the excise authorities. Madam there is also room for the Government to revise its decision about banning public drinking. I know that public drinking, in the Indian set-up, would be considered bad example. But in the European set-up, drinking in one's own room is far more offensive than drinking at a public bar. In Britain, if you are told that a man is having his drink in his room, that shows that he has reached an advanced stage of drinking. That is what it shows in Europe and in the United States if the man takes his drink in his room. I think the Minister should advise the State Governments that as far as foreign tourists are concerned, they should be allo ed to take their drink publicly, in the bar and there should be no restriction whatsoever.

My good friend Shri Tariq made a reference to organising night entertainments. I am glad that the suggestion came from an important member of the Congress Party. If the suggestion came from us, all sorts of motives would be attributed to us. There is no doubt that the absence of high life and night entertainments is one of the serious drawbacks and this drawback prevents more tourists coming to this country. We cannot be very puritanical in this respect. Some time back there was an incident. In Calcutta, they have got novel ideas about organising night entertainments. At the time when the late Dr. B. C. Roy was the Chief Minister of West Bengal, they were a little more liberal about night life in Calcutta and one enterprising hotel went to the extent of staging a show in which a lady artiste was shown as taking her bath in a tub of beer and all the spectators were applauding. Just then the police swooped down on the scene and arrested the lady and the spectators also. Now, I am not suggesting that our night life should be on the same lines because the poor lady after having to bathe in beer . . .

SHRI G. RAJAGOPALAN (Madras): Was Mr. Mani also one of the spectators?

SHRI A. D. MANI: I read it in the papers. I am a diligent reader of newspapers and I am only mentioning this incident here. What I want to say is we should not be too puritanical in this matter.

SHRI RAJ BAHADUR: Was it liquor?

SHRI A. D. MANI: No, it was beer, I am told. Not champagne, though ladies are supposed to bathe in champagne.

SHRI RAJ BAHADUR: Was it a liquor business in that case?

SHRI A. D MANI: No, she was arrested for indecent exhibition.

SHRI N. M. LINGAM (Madras): Dr. Roy was arrested?

SHRI A. D. MANI: He was not there.

SHRI N M. LINGAM: For organising it, was he not arrested?

SHRI A. D. MANI: He did not organise it. A hotel organised it. This was in West Bengal and the show was running for some days, when on somebody's suggestion, the police came down and arrested the poor lady who had already had to undergo a bath in beer. And they arrested the spectators who watched the scene.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAHANARA JAIPAL SINGH): It is time.

SHRI A. D. MANI: Just two more minutes. I have two more points to make. We need not organise night entertainments on those lines.

AN. HON. MEMBER: He is entertaining.

SHRI A. D MANI: I am just mentioning it. We should be a little more liberal about organising night entertainment. But the danger in the Government doing these things is we might get a call-attention notice from Mr. Tariq or a short-notice question about call girls and so on, because all these things go together. So one has got to be very careful in offering night entertainments.

Finally I have to make a suggestion about our publicity. I think, Madam, that there is room for coordination of our publicity in the Indian Airlines Corporation and the Air India. The joint committee on national undertakings in Britain advised that as far as the B.O.A.C. and the B.E.A. are concerned, there should be coordinated publicity. If the Air India does some publicity for attracting tourists and if publicity is also done by the Indian Airlines Corporation by publicising places which the tourists should visit, this may enable more tourists to come over to visit our country and also help us to augment our foreign exchange earnings.

SHRI M. RUTHNASWAMY: (Madras): Madam Vice-Chairman, my interest in tourist traffic began years ago when in the last days of British rule, I was appointed a member of a tourist traffic committee which went round the country to observe the facilities given to tourists and made a report. The fact is that the tourist industry is not in a flourishing condition and our tourists are counted in lakhs only, whereas if we are to earn an appreciable amount of revenue from the tourist industry, our tourists should be counted in millions as they are counted in England, Italy, Switzerland and so on. As Mr. Mani said, we cannot hope to attract tourists from America in the same numbers which Europe attracts, because after all, Europe is the nursery of American civilization and culture and the American would like to go and visit the homeland of his civilization and culture. We cannot expect the Americans or the Europeans to come in such large numbers to our country. But I do not see why we should not attract tourists from South Asia

and Southeast Asian countries, which derive their culture and civilisation to a large extent, from India. I do not think any special efforts are being made either by the Tourist Department or by our embassies in South Asia and Southeast Asia, to boost the tourist traffic in our country. In order to attract tourists, we must make India worthwhile visiting, worthwhile touring. There must be a number of tourist attractions. Not only should the places be made attractive and more information given about the routes and places, but also, as Mr. Tariq and Mr. Mani have suggested, there should be social occassions for tourists. I remember having a talk with the Maharaja of Travancore, who is also interested in the tourist traffic and he said that the great complaint of tourists from abroad was that when their visits for the day are over, when they had gone round and seen places, at the end of the day, they are at a loose end, at a blind alley. At the end of the day, they do not know what to do with themselves I do not say that we should build up night clubs or organise night clubs. But some kind of entertainment like exhibition of our dances or some musical concerts or ballets, should be organised on a systematic scale so that the tourists, whether they go to Calcutta or Madras or Delhi or Bombay, could, after their tours for the day are over, after they have had their night meal, they could be entertained by our artists and shown some peeps into our cultural resources.

I agree that the hotel industry should be largely in the private sector. I do not think any Government department which degenerates in the course of a few years into a bureaucracy, will have that personal touch which is necessary for making tourists feel at home, largely, the tourists industry should be in private hands. It is only in far-off places, in places where there are only one or two monuments of archaeological interest but which are worth visiting and which are a symbol and illustration of our ancient civilisation and culture, it is only in those places that the Government should build rest-houses providing not only lodging but also boarding. And I might recommend to the Government of India the example of the Government of Madras which has built a first class rest-house in Mahabalipuram and which has attracted hundreds of tourists ever since that facility was offered. Also the Madras Transport Service has organised special luxury buses for carrying passengers from Madras to Mahabalipuram, Kancheepuram and other places of interest nearby. Here I should like to make a special plea that the tourist places of the South, the pilgrim centres, the temple towns of the South, should get much greater publicity at the hands of our publicity agents whether in India or abroad. After all, the civilisation and culture of India rose in the South. It is not any geologically but historically also the South is more ancient than the North. There in the South we have specimens of culture and architecture which are not to be found anywhere else, not only in India, but anywhere else in the world. The Dravidian temples which are so characteristic of South Indian culture are worth visiting and if only they were publicised—the temples of not only Kancheepuram but of Chidambaram, of Madurai, of Tiruchirapalli, of Srirangam, of Rameswaram—they would attract the tourists. The corridors of Rameswaram were described by that great Architectural historian, Fergusson, as one of the greatest pieces of old architecture. Now tourism in this country means landing in Bombay or Delhi, going to Agra and if at all to Sanchi and then going back home, whereas the real places, the real historical places, the real places of interest in India are in the South.

Apart from affording these attractions certain obstacles should be removed which stand in the way of the development of tourist traffic. Our customs officials must be taught manners and courtesy. There have been innumerable cases of the tourists'

[Shri M. Ruthnaswamy.]

trunks and boxes being turned upside down and the clothes and articles not being replaced but the tourists being put to the trouble of repacking their boxes and trunks whereas if you contrast it with the behaviour of customs officials in other countries—I do not say that my experience is exceptional wherever I have gone, whether Italy or Spain or France, the customs officials just look at you and then chalk your baggage as if saying, 'You are a tourist, you are a visitor and we are not going to subject you to the indignity of having your trunk and boxes searched'. Of course, we run the risk of smugglers getting through but then smugglers can be caught if you have a proper intelligence service, if you carry out proper anti smuggling operations, and if you have a coast guard guarding the coast all round the country. You have no coast guard at all and how can you say that smuggling would not flourish?

Our train travel also must be made much more comfortable. It is not every tourist that can travel by air. Our first class coaches must be made comfortable and catering must be made suitable to European and foreign tourists. In other ways also, our railway officials and others should be instructed in the art of attracting tourists.

With regard to drink rules, not only should permits be automatically given to tourists but we must bear in mind that the tourists dislike drinking by themselves. Mr. Mani pointed out, solitary drinking is the extreme step which a drinker takes. It is the last step before final downfall. Drinking is a social occasion, is a social practice. You enjoy drinking only when you drink in the company of your fellows and a tourist especially if he is allowed to drink by himself and sees his Indian friends sitting around glum and sulky, does not enjoy his drink. So I think that the drink permit that is issued to foreign tourists should also carry with it the permit to allow the tourists to offer drinks to their Indian friends and to allow the Indian friends to offer them drinks.

These few suggestions, if adopted, will, I think, go a long way to develop our tourist traffic but I think that the Government is not doing enough to develop tourist traffic. They should make much greater effort in order to develop it because if they did it, it will be one of the greatest sources of income to the country.

SHRI P. N. SAPRU: Madam Vice-Chairman, I do not share Mr. Mani's complaint that the composition of this Committee was entirely official. Normally I am for mixed Committees or Committees of non-officials but I think there is at times an advantage in having a Committee of officials and this Report shows that the officials who handled this problem have brought to bear upon their task a broad mind.

Now, the tourist traffic declined by 3·9 per cent. before the emergency and that was the immediate reason for the appointment of this Committee. We are a country with about a hundred and fifty places of interest. We have got some ancient monuments both in the North and the South particularly as Mr. Ruthnaswamy emphasied in the South and India should be a place of interest to foreigners. If Switzerland makes a large revenue out of her tourist traffic, if Italy and Spain make large revenues out of their tourist traffic there is no reason why we should not also make some revenue out of our tourist traffic. Of course there is one great difficulty so far as this country is concerned: part of the year or nearly eight months of the year are not fit for travel. We have got a long hot summer and people do not like to travel in the hot months. But even in hot months we have the hill stations; we have Kashmir and all these can be developed as tourist centres and tourism can be a good foreign exchange earner.

If we want to attract tourists we must understand the mind of the tourists and for that ofcourse we need good publicity officers who will sell our country to them and sell their country to us.

Now, I would like to say one or two words about the private and the public sector. I notice that a prominent hotelier, Mr. Oberoi, was very vehement in his criticism of Government so far as its intention to take over partly the hotel industry was concerned. I do not think that these big questions can be looked at from the point of view of vested interests. They must be looked at from the point of view of the country as a whole and I have often felt that the hotel industry can be a good earning business; it can relieve the taxpayer; it can be made profitable if Government runs hotels in an efficient manner. They can be made profitable and the profits can go to lower the burden of the very heavy indirect taxation which the middle class people have to bear in this country. Therefore, speaking for myself, while I would not eliminate the private sector entirely in the hotel industry, I would attach greater importance to the public sector in the hotel industry than to the private sector.

May I also say that we need to learn a great deal from foreigners so far as the running and management of hotels are concerned? I suppose Mr. Oberoi, as a hotel proprietor, has found the foreigner useful in running his hotels and I see no reason why we should not engage foreigners as helpers to teach the running of hotels. One thing that the Indian does not know is how to run a hotel and we need the Indian to learn that. May I also say that it is necessary for us to revise in the twentieth century some ideas which our ancestors did not have but which we have developed in the course of our national struggle? We have got a highly puritanic attitude towards drink. Now, people outside India do not share that attitude. They do not look upon drink as a heinous sin for a man to have after a hard day's work if a man likes to have a little whisky or a little brandy to cheer him up. And he would not like to drink by himself. In fact, if you have any experience of drink, you will know that it is dangerous to drink by yourself. You get drunk if you go on drinking by yourself. In company you will maintain some control over yourself. Therefore, there should be considerable relaxation of rules so far as drinks are concerned in our hotels. I know that. I had some American friends staying in the Ashoka Hotel and they did not like the fact that they had to drink in their rooms. They wanted to have drinks in the public rooms. I think it is natural. Also, we shall have to revise some of our views on what is called night life. I do not like to use the words 'night club' which seems to have a bad odour in this country. People do not know what a night club is. But I think it is necessary to have good places of amusement for our tourist friends in this country. Even in small places there can be theatres or dances, if you like classical dances or something of that sort, to keep them engaged. I think that should attract the tourist.

It is surprising that the number of tourists who visit this country is less than two lakhs. Italy, which is a much smaller country, has got about two million tourists a year. Switzerland lives on tourist traffic. Spain which is politically not a very attractive country still manages, because of the bull fights and so on, to attract a large number of tourists. Here we have got some places of attraction for the person interested in art, culture and architecture. We have got great temples in the South, temples in Madurai, Rameswaram and Conjeeveram. Then we have got here in the North the Taj, the Red Fort and so many other places of interest to persons interested in ancient history and anthropology. I, therefore, think that a serious effort should be made to develop tourism and for this purpose it is desirable to have a corporation

[Shri P. N. Sapru]
on the lines suggested by the Committee. I would like to have on this corporation strong non-official representation. I would not like it to be confined to officials. Also, I would not hesitate to widen its scope so as to utilise the funds available from the Reserve Bank or the LIC but I would not trust the LIC funds or the Reserve Bank funds in the hands of private profiteers.

With these remarks, I give my general support to this motion.

شری پیارے لال کریل "طالب"

(اتر پردیش): مہودے - میں زیادہ سمے نہیں لوں گا مجھے جو کچھ کہنا چاہئے تھا اس سمبندھ میں وہ بہت سے مانئے سدسیوں نے کہدیا ہے مگر صرف ایک بات کی طرف میں آپ کی توجہ دلانا چاہتا ہوں - ہندوستان ایک وسیع اور خوب صورت دیش ہے یہاں پر طرح طرح کی تہذیب، طرح طرح کے لوگ موجود ہیں اور یہ باہر کے دیشوں کے لئے ایک بڑے بھاری اٹریکشن کی بات ہے - یہ صحیح ہے کہ کچھ یہاں پر ایسے مقامات ہیں جو کہ صحت افزا مقامات ہیں جہاں پر ہمارے ٹورسٹ جاتے ہیں مگر میں سرکار سے یہ کہوں گا کہ سرکار نے کوئی ایسی جگہیں ڈیولپ کرنے کی کوشش نہیں کی جو ٹورسٹس کے لئے بہت کار آمد ثابت ہو سکتی ہیں جیسے کہ ہم لوگ سوئٹزرلینڈ کو بھول جائیں اگر ہم کشمیر کو اچھی طرح سے ڈیولپ کریں - ہمارے دیش کے اندر بہت سے اور خوب صورت مقامات ہیں جن کو ڈیولپ کیا جا سکتا ہے اور جہاں تک آمدورفت کے ذرائع لائے جا سکتے ہیں مگر ان کی طرف ابھی ہم نے کوئی دھیان نہیں دیا - وہی جو پرانے مقامات ہیں، جو بہت پرانے عرصہ سے چلے آ رہے ہیں انہیں کی طرف دھیان دے رہے ہیں اور وہیں پر بڑے بڑے ہوٹل کھلتے ہیں اور وہیں پر ہم سمجھتے ہیں کہ ٹورسٹ جا سکتے ہیں - میں چند اور مقامات کے نام آپ کے سامنے رکھنا چاہتا ہوں - کشمیر میں بھدروا، کشتواڑ کا علاقہ ہے جو کہ بہت خوب صورت علاقہ ہے اس کو ڈیولپ کیا جا سکتا ہے - ہم صرف کشمیر میں گلمرگ، کھلن مرگ کو دیکھتے ہیں اور بھی بہت سے ایسے مقامات ہیں ان کو اگر ڈیولپ کیا جائے تو سوئٹزرلینڈ بھی ان کے مقابلہ میں کچھ نہیں ہے مگر ہم انہیں ڈیولپ نہیں کرتے ہیں - یہ علاقہ اتنا خوب صورت ہے کہ اس کو بہت آسانی کے ساتھ ڈیولپ کیا جا سکتا ہے - جہاں پر بڑے بڑے ہوٹل کھولے جا سکتے ہیں - یہاں پر ایک مقام جائی ہے جس کو کہا جاتا ہے کہ دنیا کی سب سے خوب صورت جگہ ہے مگر کتنے آدمیوں کو یہ معلوم ہے، کتنے لوگ وہاں جاتے ہیں؟ اس طرح کلو ویلی میں چلے جائیے وہاں منالی ایک بہت خوب صورت جگہ ہے جس کو

ڈیولپ کرنے کی ضرورت ہے یہاں پر کوئی اچھا ہوٹل نہیں ہے - ٹھہرنے کی جگہہ نہیں ہے - ذرائع آمدورفت نہیں ہیں - ہندوستان کی کسی اور اسٹیٹ میں چلے جائیے - اڑیسہ کو لے لیجئے ، بھوانیشور کو ہم نے ڈیولپ نہیں کیا - وہاں سے کچھہ دوری پر کنارک کا ٹیمپل ہے جو کہ اپنے ڈھنگ کی ایک بہت ہی خوب صورت جگہہ ہے - اس کو ہم ڈیولپ کر سکتے ہیں - اسی طرح سے جگن ناتھہ پوری ہے - چلکا لیک ہے ، وشاکھا پٹنم ہے ، یہاں پر بہت سندر بیچ بنائے جا سکتے ہیں جو کہ فارن کنٹریز کے بیچ کو مات دے سکتے ہیں - میسور میں مرکرا ایک ایسی جگہہ ہے جس کو دنیا میں ایک بہت خوب صورت جگہہ کہا جا سکتا ہے - اس کے بعد جہاں سے تمہارے تھمیا اور دو تین بڑے جنرل آئے ہیں ان کا علاقہ ہے جس کو ہم کورگ کا علاقہ کہتے ہیں - ان تمام جگہہ کو ہم ڈیولپ کر سکتے ہیں -

اس طرح سے ہم آگے چلیں - مدھیہ پردیش میں چلیں وہاں پنچ مڑھی ایک جگہہ ہے اس کو ڈیولپ کرنے کی ضرورت ہے - ابھی اس کو پورے طور سے ڈیولپ نہیں کیا گیا ہے - یہاںپر بھی ٹھہرنے کا اعلی انتظام نہیں ہے - کوئی اچھا ہوٹل نہیں ہے - اسی طرح سے آپ یو - پی - کو بھی لے لیجئے یو - پی - میں بھی کچھہ علاقے ایسے ہیں جیسے چمولی کا علاقہ ہے - کوٹدوارا کا علاقہ ہے اور بھی بہت اچھے اچھے مقامات یہاں ہیں - آپ ان کو ڈیولپ کریں - یہ بارڈر ایریا بھی ہے - یہاںپر انڈسٹریز قائم کریں ، چھوٹے چھوٹے ادھیوگ دھندے قائم کریں اور لوگوں کو لون دے کر ان کی امداد کرکے یہاں ہوٹل کھلوائیں - یہ ایسی جگہہ ہے جس کو بہت آسانی کے ساتھہ ڈیولپ کیا جا سکتا ہے -

راجستھان میں ماونٹ آبو ہے اور اس کو ڈیولپ کیا جا سکتا ہے - وہاں سانبھر لیک ہے جہاں سے ہم کو نمک دستیاب ہوتا ہے وہاں اس طرح کی کئی جگہیں ہیں جنہیں ٹورزم کے لئے آسانی کے ساتھہ ڈیولپ کیا جا سکتا ہے -

اس کے علاوہ مذہبی مقامات ہیں جن کی طرف ہماری سرکار کو دھیان دینا چاہئے - ہمارے ملک میں بہت سے ایسے تجارتی مرکز ہیں جہاں تجارت کے متعلق معاملے ہوتے ہیں - اس طرح کے مقامات کو ہم نے ابھی تک ڈیولپ نہیں کیا ہے جن کا ڈیولپ کرنا نہایت ضروری ہے - ہمارے ملک میں بہت سے ایسے علاقے ہیں مثلاً کیدارناتھہ، بدری ناتھہ، امرناتھہ، جمنوتری، کوٹ دوارہ یہ ایسے

[شری پیارے لال کریل طالب]

علاقے ہیں جن کو زیادہ سے زیادہ ڈیولپ کرنے کی ضرورت ہے کیونکہ یہ ہمارے بورڈر علاقہ میں ہیں - اگر ہم نے اس علاقے میں ٹورزم کو بڑھاوا دیا تو وہاں کے لوگوں کی اقتصادی حالت بھی کافی بہتر ہو سکتی ہے -

میں زیادہ نہیں کہوں گا صرف دو تین باتوں کی اور سرکار کی توجہ دلانا چاہتا ہوں - سرکار بڑے بڑے ہوٹل کھول رہی ہے - جہاں کہ بڑے بڑے ٹورسٹ آتے ہیں لیکن جو لوگ غریب گھر سے آتے ہیں ان کے دل میں ہی یہ اچھا رہتی ہے کہ وہ ہمارے یہاں کے رسم و رواج کو جانیں - ہمارے ملک میں بہت سے طالب علم دوسرے دیشوں کے یہاں کے رسم و رواج، روایات، تہذیب، تمدن کو سٹڈی کرنے کے لئے آتے ہیں اور ان چیزوں کے بارے میں وہ لوگ جاننے کی کوشش کرتے ہیں - اس طرح کے جو غریب لوگ آتے ہیں جو کہ بڑے بڑے ہوٹلوں میں ٹھہر نہیں سکتے - میں نے ایسے ٹورسٹوں کو دیکھا ہے جو آرڈنری ڈھابوں میں چائے پیتے ہیں اور غریب فیملیوں میں ٹھہر کر اپنی گذر بسر کرتے ہیں - آپ بڑے بڑے ہوٹل بنائیے اور ان کی سخت ضرورت ہے اور میں ان کے بنانے کے لئے منع نہیں کرتا لیکن آپ پرائیویٹ آدمیوں کو موقعہ دیجئے - جو کہ مڈل کلاس کے لوگوں کے لئے خاص خاص مقامات ہیں، جو ٹورسٹ ٹریفک کے لئے ضروری ہیں، وہاں پر ہوٹل بنائے جا سکیں تاکہ غریب لوگ سستے دام پر آسانی کے ساتھ رہ سکیں - گورنمنٹ نے اس بات کی اور دھیان نہیں دیا کہ جن جن مقامات میں ٹورسٹ جاتے ہیں وہاں پر اس طرح کا کوئی اریلنجمنٹ نہیں ہے - آپ کشمیر کی بات کرتے ہیں - آپ وہاں ریل لے جانا چاہتے ہیں، وہاں حال ہی میں کالا کوٹ میں کوئلہ دستیاب ہوا ہے اس لئے آپ کو کالا کوٹ تک ہی نہیں بلکہ سری نگر تک ریل لے جانی چاہئے - آپ کو وہاں مونو ریل چلانی چاہئے ہینگنگ ریلیں چلانی چاہئیں جس کہ وہاں لوگ آسانی کے ساتھ ایک جگہ سے دوسری جگہ آ جا سکیں - آپ کو وہاں جانے کے لئے ہوائی جہاز کا درایہ کم کرنا چاہئے تاکہ وہاں لوگ زیادہ سے زیادہ تعداد میں اور کم سے کم سمے میں پہنچ سکیں - اس طرح کے بہت سے مقامات ہمارے ملک میں ہیں - جہاں مینس آف کمیونیکیشن نہیں ہیں اور جن کو ڈیولپ کرنے کی بہت ضرورت ہے - یہ ایک بہت اہم سوال ہے ہمارے دیش کے لئے کیونکہ ہمارا دیش ایک کونٹیننٹ ہے اور یہاں پر ٹورسٹ ٹریفک کو ڈیولپ کرنا بہت ضروری ہے ہمیں ان ان جگہوں پر جانا چاہئے جہاں پر ابھی

تک ہمارے آدمی نہیں جا سکے - اور ہم نہیں جا سکے - فارن کنٹریز سے جو ٹورسٹ ہمارے ملک میں آتے ہیں اگر وہ اس ملک میں گھومنا چاہتے ہیں تو ایسے مقامات میں جہاں کہ وہ جانا چاہتے ہیں میدس آف کمیونیکیشن نہ ہونے کی وجہ سے وہ لوگ آسانی کے ساتھ نہیں جا سکتے ہیں - ایسے مقامات میں کھانے پینے کا بھی کوئی معقول انتظام نہیں ہے اور یہی وجہ ہے کہ خود ہمارے ملک کے آدمی بھی ان مقامات میں نہیں جاتے - سرکار کو ٹیکسی یا بس کا انتظام کرنا چاہئے تاکہ لوگ سستے کرایہ میں ایک جگہ سے دوسری جگہ جا سکیں اور ٹورسٹوں کو یہ چیزیں آسانی سے دستیاب ہو سکیں - جس طرح سے فارن کنٹریز میں بسوں کے اندر سہولیتیں ہوتی ہیں اس طرح سے ہماری بسوں میں نہیں ہیں - اس کی طرف بھی سرکار کا دھیان دلانا بہت ضروری ہے - میں سرکار سے عرض کرنا چاہتا ہوں کہ بسوں کو چلانے کا کام پرائیویٹ آدمیوں کو دینا چاہئے - پرائیویٹ سیکٹر کا کام ہم نے دیکھا ہے - جب سے ریلوے میں ڈیپارٹمینٹل کیٹرنگ کا کام ہوا ہے - تب سے ہی اس کا انتظام اور بھی خراب ہو گیا ہے - کھانے پینے کی چیزوں کے انتظام میں وہاں زیادہ گندگی پھیل گئی ہے - وہاں نہ کسی طرح کی صفائی ہے ، نہ نفاست ہے - میں نے وہاں کا انتظام دیکھا ہے اور آپ لوگوں نے بھی دیکھا ہوگا کہ کسی طرح کی گندگی وہاں ہوتی ہے - اسی طرح کا انتظام ہوٹلوں میں چلتا ہے - اور اشوکا ہوٹل کا انتظام بھی اسی طرح سے چلتا ہے یہ ہمارا تجربہ ہے -

श्री तारकेश्वर पांडे (उत्तर प्रदेश) : मैं एक बात पूछना चाहता हूं वह यह है कि जो पबलिक सैक्टर है वह नया है, उसमें कुछ गलती हो सकती है । तो क्या उन चीजों की तरफ ध्यान देना जरूरी है ?

شری پیارے لال کریل "طالب" : اشوکا ہوٹل کے بارے میں آپ جانتے ہیں کہ ہمارے چلانے سے ، ہمارے کھلے سے ، وہاں پر کچھ باتیں ٹھیک ہوئیں ہیں اور وہ کچھ تھپ پرافٹ دینے لگا ہے - لیکن جتنی بھی پبلک سیکٹر کی انڈر ٹیکنگ ہیں ان کا کام چلانے والے زیادہ تر افسر ہی ہوتے ہیں جن کو تجربہ نہیں ہوتا ہے - جیسا کہ ٹورسٹ کی رپورٹ میں بتایا گیا ہے کہ اس کا انتظام ایسے ایسے لوگوں کے ہاتھ میں ہے جن کو اس بارے میں ذاتی تجربہ نہیں ہے - یہی حال ہوٹلوں کا ہے اشوکا ہوٹل کا ہے ، او بڑے بڑے ہوٹلوں کا ہے جنہیں سرکار چلا رہی ہے - اس میں وہ آدمی ہوٹلوں کو چلا رہے ہیں جنہیں اس لائن کا تجربہ نہیں ہے - جو کیٹرنگ کے متعلق کچھ نہیں جانتے ہیں -

میں اور ہمارے دیش کے بھی جو آدمی جاتے ہیں انہیں بھی مجبور کرتے ہیں کہ وہ انہیں کچھ دیں - جو آدمی گائیڈوں کی سروس نہیں چاہتے ہیں - ان سے بھی یہ لوگ کچھ نہ کچھ لے لیتے ہیں - تو میں سرکار سے درخواست کرنا چاہتا ہوں کہ یہ جو گائیڈ کا سسٹم ہے اس کو تھوڑا سا تھپ کیجئے - جن مقامات میں گائیڈ نہیں ہیں وہاں پر اپنی طرف سے آپ گائیڈ مقرر کیجئے - تاکہ وہ ٹورسٹوں کو زیادہ سے زیادہ انفارمیشن دے سکیں - اگر آپ ٹریننگ گائیڈ رکھیں گے تو باہر کے ٹورسٹوں کو اس دیش کے بارے میں صحیح صحیح اطلاع دے سکیں گے - اور اس طرح سے باہر کے لوگوں کو یہاں کے بارے میں آسانی کے ساتھ سب صحیح انفارمیشن مل جائےگی -

جہاں تک پبلیسٹی کا سوال ہے اس کے بارے میں میں یہ عرض کرنا چاہتا ہوں کہ فارن کنٹریز میں ٹورزم کے بارے میں ہماری اور سے زیادہ پبلیسیٹی نہیں ہے - اس بارے میں کوئی معقول پبلیسیٹی کا انتظام سرکار کی اور سے نہیں کیا گیا ہے - تو اس سلسلہ میں میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ جو ہماری ایمبیسیز ہے ان کے ذریعہ آپ دوسرے ملکوں میں ٹورزم کے متعلق پبلیسٹی کیجئے -

[شری پیارے لال کریل "طالب"]

اگر یہ چیز دور کر دی جائے تو گورنمنٹ کو اور عام پبلک کو بھی بہت فائدہ ہوگا لیکن گورنمنٹ اس چیز کو کرنے کے لئے تیار نہیں ہے - وہ تو نوکر شاہی کے بل پر چل رہی ہے اور اسے اپنے نوکروں پر وشواس ہے - ساری حکومت نوکروں کے دوارا چلتی ہے - ہم لاکھ چلاتے رہیں وہ کوئی دھیان نہیں دیتی - جیسا کہ میں نے ابھی کہا کہ ٹیکسی اور بسوں کا خاص بندوبست کیا جانا چاہئے لیکن وہ اس بارے میں کچھ نہیں کرتی ہے -

اب میں ایک اور سوال کی طرف سرکار کی توجہ دلانا چاہتا ہوں جو ہمارے گائڈس ہیں اور ہسٹوریکل مقامات میں جو گائڈس رہتے ہیں وہ ٹورسٹوں کو لوٹنے کی بات کرتے ہیں - باہر کے جو ٹورسٹ آتے ہیں ان سے زیادہ سے زیادہ روپیہ اینٹھنے کی کوشش کرتے ہیں - میں عرض کرنا چاہتا ہوں کہ اس چیز کو ختم کیا جائے - یہ ہمارے دیش کے لئے بہت بری بات ہے - گورنمنٹ ایسے مقامات میں جہاں کہ ٹورسٹ بہت جاتے ہیں - ٹریننگ گائیڈ رکھیں اور ان کو معقول تنخواہ دیں - جب یہ دیکھنے میں آتا ہے کہ ان مقامات میں جو ٹورسٹ جاتے ہیں ان سے یہ گائیڈ روپیہ اینٹھنے کی کوشش کرتے

دوسرے ملکوں میں جو هماری ایجینسیز هیں ان کے ذریعه پبلیسیٹی کا انتظام کیجئے - اور جو دوسری صورتیں هیں ان کے ذریعه بھی آپ پبلیسٹی کا انتظام کر سکتے هیں - اگر پبلیسیٹی کا انتظام هو گیا تو یه جو ٹورسٹ ٹریفیک هے وہ همارے ملکوں میں بڑھتا هی چلا جائے گا اور زیادہ تعداد میں ٹورسٹ همارے ملک میں آئیں گے - اس کی وجه سے همارا تعلق دوسرے ملکوں سے زیادہ سے زیادہ خوشگوار هوگا - دوسرے ملک والے همارے تمدن، اخلاق، تہذیب اور دوسری باتوں کو اچھی طرح سے سمجھ سکیں گے اور پیس لانے کے لئے دنیا میں یه بہت هی ضروری چیز هے -

میں آپ کا شکریه ادا کرنا چاهتا هوں که آپ نے مجھے اس موشن کے بارے میں بولنے کے لئے تھوڑا سا ٹائم دیا -

†[श्री प्यारेलाल कुरील 'तालिब' (उत्तर प्रदेश) : मैडम, मैं ज्यादा समय नही लूंगा मुझे जो कुछ कहना चाहिए था, इस सम्बन्ध में, वो बहुत से माननीय सदस्यों ने कह दिया है मगर सिर्फ एक बात की तरफ मैं आपकी तवज्जो दिलाना चाहता हूं । हिन्दुस्तान एक वसीह और खूबसूरत देश है यहां पर तरह तरह की तहजीब, तरह तरह के लोग, मौजूद हैं और यह बाहर के देशों के लिए एक बड़ा भारी एट्रेक्शन की बात है । यह सही है कि कुछ जगहों पर ऐसे मकामात है जो कि सैकड़ों अफज़ल मकामात हैं जहां पर हमारे टूरिस्ट जाते है मगर मैं सरकार से यह कहूंगा कि सरकार ने कई ऐसी जगहें डेवलप करने की कोशिश नहीं की जो टूरिज्म के लिए बहुत कारआमद साबित हो सकती हैं जैसे कि हम लोग स्विटजरलैण्ड को भूल जाएं अगर हम काश्मीर को अच्छी तरह से डेवलप करें । हमारे देश के अन्दर बहुत से और खूबसूरत मकामात हैं जिनको डेवलप किया जा सकता है और जहां तक आमदोरफ्त के जराये लाए जा सकते हैं मगर उनकी तरफ अभी हमने कोई ध्यान नहीं दिया । वही जो पुराने मकामात हैं, जो बहुत पुराने अर्से से चले आ रहे हैं उन्हीं की तरफ ध्यान दे रहे है और वहीं पर बड़े बड़े होटल खुलते है और वहीं पर हम समझते हैं कि टूरिस्ट जा सकते है । मैं चन्द और मकामात के नाम आपके सामने रखना चाहता हूं । काश्मीर में भदरवा, किश्तवाड़ का इलाका है जो कि बहुत खूबसूरत इलाका है, उसको डेवलप किया जा सकता है । हम सिर्फ काश्मीर में गुलमर्ग, खिलनमर्ग को देखते हैं, और भी बहुत से ऐसे ऐसे मकामात हैं उनको अगर डेवलप किया जाए तो स्विटजरलैण्ड भी उनके मुकाबिले में कुछ नहीं है मगर हम उन्हें डेवलप नहीं करते है । यह इलाका इतना खूबसूरत है कि इसको बहुत आसानी के साथ डेवलप किया जा सकता है । यहां पर बड़े बड़े होटल खोले जा सकते हैं । यहां पर एक मकाम जाई है जिसको कहा जाता है कि दुनिया की सबसे खूबसूरत जगह है मगर कितने आदमियों को यह मालूम है, कितने लोग वहां जाते हैं । इसी तरह कुल्लु वैली में चले जाइए वहां मनाली एक बहुत खूबसूरत जगह है है जिसको डेवलप करने की जरूरत है । यहां पर कोई अच्छा होटल नही है, रहने की जगह नहीं है । जराए आमदोरफ्त नही हैं । हिन्दुस्तान की किसी और स्टेट में चले जाइए । उड़ीसा को ले लीजिए, भुवनेश्वर को हमने डेवलप नही किया । वहां से कुछ दूरी पर कोनार्क का सन टेम्पल है जो अपने ढंग की

†[ ] Hindi transliteration.

[श्री प्यारेलाल कुरील 'तालिब']

एक बहुत ही खूबसूरत जगह है, इसको हम डेवलप कर सकते है। इसी तरह से जगन्नाथ पुरी है। चल्कार लेक है, विशाखापट्नम है यहा पर बहुत सुन्दर बीच बनाये जा सकते है जो कि फारिन कण्ट्रीज के बीच को मात दे सकते है। मैसूर में मर्करा एक ऐसी जगह है जिसको दुनिया में एक बहुत खूबसूरत जगह कहा जा सकता है। इसके बाद जहा से हमारे सिपैया और दो तीन बड़े जनरल आते हैं उनका इलाका है जिसको हम कुर्ग का इलाका कहते है। इन तमाम जगहों को हम डेवलप कर सकते हैं।

इसी तरह से हम आगे चले, मध्य प्रदेश में चले, वहा चिमड़ी एक जगह है, उसको डेवलप करने की जरूरत है। अभी इसको पूरे तौर से डेवलप नही किया गया है। यहा पर भी ठहरने का आला इन्तजाम नही है, कोई अच्छा होटल नही है। इसी तरह से आप यू० पी० को भी ले लीजिए, यू० पी० में भी कुछ इलाके ऐसे है जैसे चमोली का इलाका है, कोटद्वारा का इलाका है और भी बहुत अच्छे अच्छे मकामात यहा है। आप इनको डेवलप करे, ये बार्डर एरिया भी हैं। यहा पर इण्डस्ट्रीज कायम करे, छोटे छोटे उद्योग धंधे कायम करे और लोगो को लोन देकर उनकी इमदाद करके यहा होटल खुलवाएं। यह ऐसी जगह है जिसको बहुत आसानी के साथ डेवलप किया जा सकता है।

राजस्थान मे माउण्ट आबू है और इसको डेवलप किया जा सकता है वहा साम्भर लेक है जहा से हमको नमक दस्तयाब होता है, वहा इस तरह की कई जगहे है जिन्हे टूरिज्म के लिए आसानी के साथ डेवलप किया जा सकता है।

इसके अलावा मजहबी मकामात है जिनकी तरफ हमारी सरकार को ध्यान देना चाहिए। हमारे मुल्क मे बहुत से ऐसे तिजारती मर्कज हैं जहा तिजारत के मुतल्लिक मामले होते है। इस तरह के मकामात को हमने अब तक डेवलप नही किया है जिनका डवलेप करना निहायत जरूरी है। हमारे मुल्क में बहुत से ऐसे इलाके हैं मसलन किदारनाथ, बद्रीनाथ, अमरनाथ, चमोली, कोटद्वारा, ये ऐसे इलाके है जिनको ज्यादा से ज्यादा डेवलैप करने की जरूरत है क्योंकि ये हमारे बोर्डर इलाके में हैं। अगर हमने इस इलाके में टूरिज्म को बढ़ावा दिया तो वहा के लोगों की इक्तसादी हालत भी काफी बेहतर हो सकती है।

मैं ज्यादा नही कहूगा सिर्फ दो तीन बातों की ओर सरकार की तवज्जो दिलाना चाहता हूं। सरकार बड़े बड़े होटल खोल रही है जहा कि बडे बड़े टूरिस्ट आते है लेकिन जो लोग गरीब घर से आते है उनके दिल में भी यह इच्छा रहती है कि वो हमारे यहा के रस्मो रिवाज को जाने, हमारे मुल्क में बहुत से तालिबे-इल्म दूसरे देशों के, यहां के रस्मो-रिवाज रिवायात, तहजीबओतमद्दुन को स्टडी करने के लिए आते है और इन चीजों के बारे में वो लोग जानने की कोशिश करते है। इस तरह के जो गरीब लोग आते हैं जो कि बड़े बड़े होटलों में ठहर नही सकते, मैंने ऐसे टूरिस्टों को देखा है जो आर्डीनरी ढाबों में चाय पीते हैं और गरीब फैमिलियों मे ठहर कर गुजर बसर करते हैं। आप बड़े २ होटल बनाईए और इनकी सख्त जरूरत है और मैं इनके बनाने के लिए मना नही करता लेकिन आप प्राइवेट आदमियों को मौका दीजिए जो कि मिडिल क्लास के लोगो के लिए खास खास मकामात हैं, जो टूरिस्ट ट्रैफिक के लिए जरूरी हैं, वहां पर होटल बनाये जा सकें ताकि गरीब लोग सस्ते दाम पर आसानी के साथ रह सकें। गवर्नमेंट ने इस बात की ओर ध्यान नही दिया कि जिन जिन मकामात में

टूरिस्ट जाते हैं वहां पर इस तरह का कोई एरजमेंट नहीं है । आप काश्मीर की बात करते हैं । आप वहां रेल ले जाना चाहते हैं । वहां हाल ही में कालाकोट में कोयला दस्तयाब हुआ है, इसलिए आपको कालाकोट तक ही नहीं बल्कि श्रीनगर तक रेल ले जानी चाहिए । आपको वहां मीनो रेल चलानी चाहिए, हैंगिंग रेलें चलानी चाहिए जिससे कि वहां लोग आसानी के साथ एक जगह से दूसरी जगह आ जा सकें । आपको वहां जाने के लिए हवाई जहाज का किराया कम करना चाहिए ताकि वहां लोग ज्यादा से ज्यादा तादाद में और कम से कम समय में पहुंच सकें । इस तरह के बहुत से मकामात हमारे मुल्क में हैं । जहां मीन्स आफ कम्यूनीकेशन नहीं है और जिनको डैवलप करने की बहुत जरूरत है। यह एक बहुत अहम सवाल है हमारे देश के लिए क्योंकि हमारा देश एक कोन्टिनेंट है और वहां पर टूरिस्ट ट्रैफिक को डेवलप करना बहुत जरूरी है । हमें उन उन जगहों पर जाना चाहिए जहां पर अभी तक हमारे आदमी नहीं जा सके, हम नहीं जा सके । फारेन कन्ट्रीज से जो टूरिस्ट हमारे मुल्क में आते हैं अगर वो इस मुल्क में घूमना चाहते हैं तो ऐसे मकामात में जहां कि वो जाना चाहते हैं मीन्स आफ कम्यूनिकेशन न होने की वजह से वो लोग आसानी के साथ नहीं जा सकते हैं । ऐसे मकामात में खाने पीने का भी कोई माकूल इन्तजाम नहीं है और यही वजह है कि खुद हमारे मुल्क के आदमी भी इन मकामात में नहीं जाते । सरकार को टैक्सी या बसों का इन्तजाम करना चाहिए ताकि लोग सस्ते किराए में एक जगह से दूसरी जगह जा सकें और टूरिस्टों को ये चीजें आसानी से दस्तयाब हो सकें । जिस तरह से फारेन कन्ट्रीज में बसों के अन्दर सहूलियतें होती हैं उसी तरह से हमारी बसों में नहीं हैं, इसकी तरफ भी सरकार का ध्यान जाना बहुत जरूरी है । मैं सरकार से यह अर्ज करना चाहता हूं कि बसों का चलाने का काम प्राइवेट आदमियों को देना चाहिए । प्राइवेट सैक्टर्स का काम हमने देखा है । जब से रेलवे में डिपार्टमेंटल केटरिंग का काम हुआ है तब से ही इसका इन्तजाम और भी खराब हो गया है । खाने पीने की चीजों के इन्तजाम में वहां ज्यादा गन्दगी फैल गयी है । वहां ना किसी तरह की सफाई है ना फासत है । मैंने वहां का इन्तजाम देखा है और आप लोगों ने भी देखा होगा कि किस तरह की गन्दगी वहां होती है । इसी तरह का इन्तजाम इन होटलों में चलता है और अशोका होटल का इन्तजाम भी इसी तरह से चलता है । यह हमारा तजुर्बा है ।

श्री तारकेश्वर पांडे (उत्तर प्रदेश): मैं एक बात पूछना चाहता हूं कि वह यह है कि जो पब्लिक सैक्टर है वह नया है, उसमें कुछ गलती हो सकती है । तो क्या उन चीज की तरफ ध्यान देना जरूरी है ?

श्री प्यारेलाल कुरील 'तालिब' : अशोका होटल के बारे में आप जानते हैं कि हमारे चिल्लाने से, हमारे कहने सुनने से, वहां पर कुछ बातें ठीक हुई हैं और वो कुछ प्रफिट देने लगा है । लेकिन जितनी भी पब्लिक सैक्टर के अन्डर टेकिंगस हैं उनका काम चलाने वाले ज्यादातर अफसर ही होते हैं जिनको तजुर्बा नहीं होता है । जैसा कि टूरिस्ट की रिपोर्ट में बताया गया है कि इसका इन्तजाम ऐसे ऐसे लोगों के हाथ में है जिनको इसके बारे में कोई तजुर्बा नहीं है । यही हाल होटलों का है, अशोका होटल का है, और बड़े २ होटलों का है, जिन्हें सरकार चला रही है । इसमें वो आदमी होटलों को चला रहे हैं जिन्हें इस लाईन का तजुर्बा नहीं है । जो केटरिंग के मुतल्लिक कुछ नहीं जानते हैं । अगर यह चीज दूर कर दी जाए तो गवर्नमेंट को और आम पब्लिक को भी बहुत फायदा होगा लेकिन गवर्नमेंट इस चीज को करने के लिए तैयार नहीं है । वो तो नौकरशाही के बल पर चल रही है और इसे अपने नौकरों पर विश्वास है । सारी हुकूमत नौकरों के द्वारा चलती है हम लाख चिल्लाते रहे वो कोई ध्यान नहीं देती ।

[श्री प्यारेलाल कुरील 'तालिब']

जैसा कि मैंने अभी कहा कि टैक्सी और बसों का खास बन्दोबस्त किया जाना चाहिए लेकिन वह इस बारे में कुछ नहीं करती है।

अब मैं एक और सवाल की तरफ सरकार की तवज्जो दिलाना चाहता हूं। जो हमारे गाइड्स हैं और हिस्टोरिकल मकामात में जो गाइड्स रहते हैं वो टूरिस्टों को लूटने की बात करते हैं। बाहर के जो टूरिस्ट आते हैं उनसे ज्यादा से ज्यादा रुपया ऐंठने की बात करते हैं। मैं अर्ज करना चाहता हूं कि इस चीज को खत्म किया जाये यह हमारे देश के लिए एक बहुत बुरी बात है गवर्नमेंट ऐसे मकामात में जहां कि टूरिस्ट बहुत जाते हैं ट्रेंड गाइड रक्खें और उनको माकूल तनख्वाह दें। यह देखने में आता है कि इन मकामात में जो टूरिस्ट जाते हैं उनसे ये गाइड रुपया ऐंठने की बात करते हैं और हमारे देश के भी जो आदमी जाते हैं उनको भी मजबूर करते हैं कि वो उन्हें कुछ दें। जो आदमी गाइडों की सर्विस नहीं चाहते हैं उनसे भी ये लोग कुछ न कुछ ले लेते हैं। तो मैं सरकार से दरख्वास्त करना चाहता हूं कि ये जो गाइड का सिस्टम है इसको थोड़ा सा ठीक कीजिए। जिन मकामात में गाइड नहीं हैं वहां पर अपनी तरफ से गाइड मुकर्रर करें। ताकि वो टूरिस्टों को ज्यादा से ज्यादा इनफारमेशन दे सकें। अगर आप ट्रेंड गाइड रक्खेंगे तो वो बाहर के टूरिस्टों को इस देश के बारे में सही सही इत्तला दे सकेंगे। और इस तरह से बाहर के लोगों को यहां के बारे में आसानी के साथ सब सही इनफारमेशन मिल जाएगी।

जहां तक पब्लिसिटी का सवाल है इसके बारे में मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि फारेन कन्ट्रीज में टूरिज्म के बारे में हमारी ओर से ज्यादा पब्लिसिटी नहीं है। इस बारे में कोई माकूल पब्लिसिटी का इन्तजाम सरकार की ओर से नहीं किया गया है और इस सिलसिले में मैं यह कहना चाहता हूं कि जो हमारी एयरवेज है उसके जरिए आप दूसरे मुल्कों में टूरिज्म के मुताल्लिक पब्लिसिटी कीजिए। दूसरे मुल्कों में जो हमारी एमबैसीज हैं उनके जरिए पब्लिसिटी का इन्तजाम कीजिए और जो दूसरी सूरतें हैं उनके जरिए भी आप पब्लिसिटी का इन्तजाम करें। अगर पब्लिसिटी का इन्तजाम हो गया तो यह जो टूरिस्ट ट्रैफिक है वह हमारे मुल्क में बढ़ता ही चला जायगा और ज्यादा तादाद में टूरिस्ट हमारे मुल्क में आवेंगे, इसकी वजह से हमारा ताल्लुक दूसरे मुल्कों से ज्यादा से ज्यादा खुशगवार होगा, दूसरे मुल्क वाले हमारे तमद्दुन, अखलाक, तहजीब और दूसरी बातों को अच्छी तरह से समझ सकेंगे और पीस लाने के लिए दुनिया में यह बहुत ही जरूरी चीज है।

मैं आपका शुक्रिया अदा करना चाहता हूं कि आपने मुझे इस मोशन के बारे में बोलने के लिए थोड़ा सा टाइम दिया।]

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया (मध्य प्रदेश): उपसभाध्यक्ष महोदय, पर्यटन का जो महत्व है वह विदेशी मुद्रा कमाने की दृष्टि से तो है ही, उसके साथ ही साथ अन्तर्राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से भी अत्यन्त महत्व का है तथा विचारों का आदान प्रदान और एक दूसरे को समझने का सब से बड़ा साधन है।

भारतवर्ष अपने आप में एक छोटा सा महाद्वीप के समान है। यहां अनेक प्रकार की भाषाएं, रीति रिवाज, रहन सहन, आचार विचार, अलग जलवायु और कई बातें हैं। इन सब बातों के होते हुए भी, भारतवर्ष में अनेकता होने के बाद भी हम उसमें एकता का जो स्वरूप देखते हैं उसका कारण यह है कि हमारे भारतवर्ष के चारों कोनों में एकता का स्वरूप देने के माध्यम हमारे चारों धाम हैं। इन चारों धामों की यात्रा करने के लिए भारतवर्ष के कोने कोने से लोग एक स्थान से दूसरे स्थान जाते है और यात्रा करते हैं, एक दूसरे से मिलते, विचारों का आदान प्रदान करते हैं। इन चारों धामों

की यात्रा ने ही भारत में कई प्रकार की विभिन्नतायें होने पर भी एकता का स्वरूप दे रखा है। अन्तर्राष्ट्रीय एकता को कायम रखने की दृष्टि से भी, एक दूसरे को समझने की दृष्टि से भी, हमारे यहां पर पर्यटकों का आना जाना अत्यन्त आवश्यक है। पर्यटकों को बढ़ावा देने के बारे में रिपोर्ट में जो सुझाव दिये गये हैं उनके बारे में हमारी सरकार उपेक्षा ही बरत रही है यह मेरा कहना है। बजट में जितना रुपया रखा जाता है उसको हमारी सरकार खर्च नहीं ... । पहली और दूसरी योजना में ... योजना में भी जो ... नहीं हुई है उसके अनुसार अभी तक जितना खर्च हो जाना चाहिये था वह हो नहीं पाया। इसके टार्गेट में हमने पहले ही कम रुपया रखा और उसको भी हम खर्च न करें तो यह कुछ स्वागत नहीं है

दूसरी बात जिसकी ओर मैं ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं वह यह है कि टूरिस्ट विभाग के द्वारा कई पब्लिकेशन्स निकाले जाते हैं मगर इस बात पर ध्यान विशेष नहीं दिया जाता कि जिस देश में हम प्रचार करने वाले हैं उस देश के लोगों की मनोवैज्ञानिक स्थिति कैसी है। उनकी साइकालाजी का स्टडी करके कि उनको हमारे देश की कौन सी चीज आकर्षित कर सकती है, उसका जब तक हम उनको नहीं बताते तब तक हम उनको कुछ विशेष आकर्षित कर सकेंगे यह सम्भव नहीं।

हमारे यहां पर काश्मीर का सौंदर्य भी है जहां पर योगियों का योग और भोगियों का भोग दोनों सार्थक होते हैं। हमारे यहां पर आगरा में ताजमहल भी है जहां पर जा करके आदमी शाहजहां और नूरजहां के प्रेमालाप को सुन कर के आसक्ति की ओर भी बढ़ सकता है। यहां पर हरिद्वार और ऋषिकेश सरीखे स्थान भी हैं जहां के किसी आश्रम में जाकर सारे संसार में विरक्त होने का पाठ भी पढ़ सकते हैं।

<u>شری اے - ایم - طارق :</u> وہ تو شاہ جہاں کی ماں کا نام تھا -

†[श्री ए० एम० तारिक: वह तो शाहजहां की मां का नाम था।]

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया: वह तो तारिक साहब के पास है।

तो हमारे यहां पर चित्तौड़गढ़ भी है जहां वीर प्रताप की गौरव गाथा सुन कर उत्साह ले सकते हैं तथा मीनाक्षी का मन्दिर भी है जहां भक्ति में लीन हो नृत्य की कला भी देख सकते हैं और धार्मिक दृष्टि से अलग अलग देशों के लोगों को आकर्षित करने के लिये हमारे यहां कई प्रकार के मन्दिर हैं, स्थान हैं, मकबरे हैं। ऐसी स्थिति में सब से महत्व की जो चीज है और जिसकी उपेक्षा की गई है इस रिपोर्ट में वह है और देशों के लोगों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन। अगर दक्षिण पूर्व एशिया के लोगों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन हो तो उनके धार्मिक आचार विचार का भी अध्ययन होना चाहिये। जापान के लोग चाहेंगे कि उनके सामने हम जितने यहां के बौद्ध स्थान हैं, जैसे सारनाथ का स्तूप, सांची का स्तूप, राजगृही का स्थान नालन्दा आदि, उनका यदि हम प्रचार करें तो वे हमारे देश की ओर आकर्षित हो सकते हैं। अगर हम अरेबिक कन्ट्रीज की तरफ जायें तो अजमेर की दरगाह ख्वाजा साहब या यहां की हजरत निजामुद्दीन साहब की दरगाह या यहां की जामा मस्जिद है, इन सब का पब्लिश करके उनको हम आकर्षित कर सकते हैं। मगर यहां एक डंडे से सबको हांका जाता है। जितने प्रकाशन होते हैं वे सारी दुनिया के लिये एक सरीखे चलते हैं। तो मैं प्रार्थना करूंगा कि हमारे भारतवर्ष में आकर्षण के कई प्रकार के केन्द्र हैं जो सब लोगों को आकर्षित कर सकते हैं। हम यूरोप के लोगों को भी आकर्षित कर सकते हैं, अमेरिका के

†[ ] Hindi transliteration.

[श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया]

लोगों को भी आकर्षित कर सकते है और अरब के लोगों को भी आकर्षित कर सकते है । इसलिये हमारे टूरिस्ट विभाग को सब देशों के लोगों का अलग अलग मनोवैज्ञानिक अध्ययन करना चाहिये कि प्रत्येक देश के लोगों के लिये हमारे देश में क्या क्या आकर्षण के केन्द्र हो सकते है । अलग अलग देशों के लोगों के अलग अलग विचार होते हैं । प्राचीन काल मे लोग पर्यटन करना चाहते हैं, मगर अपने अपने दृष्टिकोण से करना चाहते है । इसलिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम उनका मनोवैज्ञानिक अध्ययन करें और फिर उनको अपनी तरफ आकर्षित करे तो ज्यादा अच्छा होगा ।

अब ये जो बुकलेट्स वगैरह छपी हैं, इन बुकलेट्स में बड़े अच्छे तरीके से बताया है कि विदेशी यात्री को ऐसा करना, वैसा करना, और सारी बातें हैं, मगर इन किताबों के अनुसार लोगों को कोई लाभ मिल नहीं पाता । कस्टम्स अथारिटी की वही दिक्कत है, शराब पीने वालों का शराब पीने में वही कठिनाई पड़ती है, और सब तरह की असुविधाय वैसी की वैसी कायम हैं । इसके अतिरिक्त इस पब्लिकेशन में एक दो पेज पढ़ने पर थोड़ी सी गलती मुझे मालूम पड़ी । मुझे समझ में नहीं आता है कि हमारे यहां पर हिस्टोरियन भी है, विद्वान भी हैं, और सारी बातें हैं, मगर इसमें लिखा गया है :

"From Hinduism grew two new religious faiths—Buddhism and Jainism, two and a half millennia ago."

जैनिज्म को बताया है कि वह २५०० साल पहले यहां पर पैदा हुआ । मेरे खयाल में इतिहास ने इस बात को प्रमाणित कर दिया है कि उसके पहले से जैनियों के तीर्थंकर और पार्श्वनाथ हैं । जैन धर्म के मानने वालों की दृष्टि से उनके जो पहले तीर्थंकर हुए, तो ऋषभदेव, उस समय से यह धर्म चला आ रहा है । ऐसी स्थिति में यह कहना "Jainism, found by Mahavira." यह गलत पब्लिकेशन है और कुछ ठीक नहीं लगता ।

श्री एन० एस० अनवर (मद्रास) यह जो प्वाइंट आपने पेश किया है.....

श्री विमलकुमार मन्नालाल जी चौरड़िया: १६६, राउज़ अवन्यु, में आ जाइये । मैं सब बता दूंगा ।

श्री एन० एस० अनवर : यह जो आपने प्वाइंट पेश किया है जैनिज्म में महायान और हीनयान का, तो मेहरबानी करके तारीख बताइये कि उसका वजूद कब हुआ ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAHANARA JAIPAL SINGH): This is going away from the point.

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया: माननीय अनवर साहब मुझको समझ ही नहीं पाये । मैंने न महायान कहा और न हीनयान कहा । मैंने तो जैन धर्म के फाउंडेशन के बारे में चर्चा की ।

तो इन बातों को अपने पब्लिकेशन में ध्यान दे करके और मुख्यतया विदेशियों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करवा करके, उनके लिये जो आकर्षण के केन्द्र हमारे यहां हो सकते हैं, उनका स्थान देने का कष्ट करें ।

आपने समय दिया, इसके लिये धन्यवाद ।

SHRI RAJ BAHADUR: Madam, I am grateful to the House and in particular to the Members who have raised this discussion. It very rightly . . .

SHRI MULKA GOVINDA REDDY (Mysore): Madam, we sent one name, that of Shri Rajendra Pratap Sinha; from our group, nobody has spoken on this motion.

SHRI RAJ BAHADUR: I have no objection.

SHRI RAJENDRA PRATAP SINHA: Madam Vice-Chairman, I welcome the opportunity to speak on such an important subject as tourism which gives, as stated in this Report, 3 per cent. of our export earnings. I wonder what steps Government has been taking, positive and active steps, to enlarge this tourist earning. I find that Government has been particularly negligent in this matter, in not taking any positive steps to enlarge these earnings. The Report goes on to say that although practically three years of the Plan are now over, the Plan allocation of Rs. 8 crores has not been properly utilised. It is stated here that the utilisation rate has been very low. I would like to know from the hon. Minister what has been the utilisation out of the sum of Rs. 8 crores allotted for tourism in the Third Plan, out of which Rs. 3½ crores were to be spent by the Centre and Rs. 4½ crores were to be spent by the State Governments.

A point has been made about the corporation suggested by this Committee. I am strongly in favour of the establishment of such a corporation as recommended here. I am one of those who would like to plead that the public sector should take a more active part in the development of tourism in this country; otherwise, the tourist traffic is not going to develop, as is evident from this Report. Not only in the Communist and socialist countries, but even in countries where the capitalist economy is predominant, in those countries also, the State has taken an active part in the promotion of tourism. By active part, I mean to say that they have invested money, they have formed corporations, they have hotels of all kinds. All these things should be done in India if we really want to do business.

Now, coming to hotels, in spite of the facilities given and in spite of the public sector resources placed at the disposal of the private sector for the development of hotels, I am sorry that the private sector has not been forthcoming for the establishment of hotels, and during the past few years, only 431 rooms have been made available for the tourist traffic. Now, the Report has pointed out about the low-priced hotels. It is this corporation which can develop the low-priced hotels on a large scale at the various centres of India, to which tourists could be attracted and to which various speakers have referred. All these places which have been referred to and which can become a paradise for tourist traffic, can never attract any tourists, whether Indian or foreign, unless proper hotel accommodation—not only hotels but also motels—is provided there, and if the private sector is not forthcoming to do that, it is for this corporation in the public sector to do that.

Now, I would also like that the private lodging facilities should be utilised in the meanwhile for getting foreign tourists. In foreign countries my experience has been that tourist offices maintain long lists of rooms available in big cities with private persons, where the visiting tourists may go and stay. This type of accommodation should be thought of in our country and I am sure the people here can make some money out of that as well.

5 P.M.

Now the tourists visiting India can encourage further tourists or discourage further tourists. If they go satisfied with India, they will propagate for others to come to India, but if they go dissatisfied, they will ask their friends not to visit India. I have come across many tourists who have been very much dissatisfied with the treatment that they have received here in India, particularly at the customs posts. On several occasions, on the floor of this House, this point has been made that the tourists get very bad treatment at the customs posts. But nothing has been done so far to improve it. The Minister for tourism should take this matter up on a very urgent basis with

[Shri Rajendra Pratap Sinha.]

the Finance Ministry, so that the customs regulations or the customs formalities for the visiting tourists are so amended that they do not feel the vexatious and the harassing treatment that they get now. We visit foreign countries and we are cleared in a matter of seconds, not even minutes. Why should not such facilities be available to visiting tourists here? That is a point that must be examined, that must be given priority consideration.

Now I would also like to support the view that the prohibition laws should be modified to such an extent that the tourists coming here enjoy life. They are at present going absolutely dissatisfied.

Then the other point which I would like to urge is the package tour programme which has been recommended by this committee. When we go to foreign countries, we buy the tickets, all covered, to go everywhere, including visits to the night clubs. Such a type of arrangement should be done here, so that the tourists coming here can be sure of what amounts they must spend, in all, to visit such and such places in India.

The last point, Madam Vice-Chairman, I like to make is that we must develop the centres of entertainment, in this country. We have got our own culture and our own arts, which can be very well appreciated and be entertaining to the visiting tourists. Well, about the night life and the night club points have been made. I know that most of the members, even Members of Parliament and Ministers, going abroad enjoy night life and night clubs.

SHRI A. B. VAJPAYEE: How do you know?

SHRI RAJENDRA PRATAP SINHA: I know from personal experience. And it is rather amusing to me that those very people, on coming back to India, talk about morality and about not going to night clubs or night enjoyment. There is nothing wrong in it; I do not want that we should encourage nudity or things like that, or any vulgar type of entertainment, and last year, when I was in England, that was a question which was engaging their attention. We can safeguard against that type of entertainment developing, but at the same time we must arrange to provide for proper entertainment for the visiting tourists.

With these words, Madam, I would like to support the motion.

SHRI RAJ BAHADUR: I am very grateful to the Members for raising this discussion, particularly to the sponsors of this motion. It is extremely important that proper attention and light is focussed on this important industry, namely, the tourist industry. The importance of this industry is realised on all hands and I think Madam, from all sections of the House a powerful voice has been raised in support of introducing measures to step up this industry as best as we can. Some concern has been shown—and rightly—for the decline in the tourist traffic that we experienced last year, and to that extent I understand it. But to draw too much out of it would hardly be justifiable, or can hardly be sustained. Such industries—I am not trying to take a complacent view of things—depend upon so many factors, and naturally all those factors react, and react strongly, in the determination of the quantum of tourist traffic that we are likely to draw. By and large our country has fared well, and it could be seen from the figures given in Appendix III to this report, that whereas in 1952 the total tourist traffic to India was 20,503, it rose to 139,804 in 1961, which is about seven times as much.

SHRI RAJENDRA PRATAP SINHA: But you should talk relatively, not absolutely. In some other countries the rise has been to the tune of 13

per cent each year without showing any decline any year.

SHRI RAJ BAHADUR: We have not been faring badly even in regard to world trends. Our rise is 700 per cent, and the total rise in world figures for tourism—as you will see—is 192 3 per cent during this period. The last entry in this particular statement, on page 87, will show that the total world trends have shown an increase of about 192 per cent. Even apart from that, from year to year if we take it, we really came to a prominent spurt, a noticeable spurt in our tourist traffic round about the year 1958, and the increase in tourist traffic in that year over the figure for the year 1957 was as much as 14·5 per cent. In 1959, as compared to 1958, the increase was 18·7 per cent. In the year 1960, over the year 1959, the increase was 12·5 per cent. So it can be said that the momentum of increase decreased in 1960, but gaining of a momentum as high as 12 per cent or 18 per cent is by itself a fact which has to be taken due notice of. I do not claim for the Department or for the Government that all this momentum was due to the steps taken by the Government or by the industry. It was largely due to the appeal that India has as a tourist country for the tourists all over the world. This momentum was again regained, to some extent, in 1961, when it rose to 13·60 per cent. as against 12·5 per cent in 1960. The unfortunate decline, however, of which we are all complaining and we are all concerned about, came in 1962 when, apart from losing the entire momentum of growth, there was a decline and the decline was as much as 3·9 per cent.

SHRI RAJENDRA PRATAP SINHA: This is all the more the reason why a sustained effort is necessary.

SHRI RAJ BAHADUR: Now by the time we built up that high momentum —I told you that from 20,503 in 1952 it rose to 139,804 in 1961—well, by that time, whatever the weakness or the shortages from which the industry suffered came to light, rather they came to light in too much of a pronounced manner. That also can by itself be one of the causes for this decline. Mr. Vajpayee has pointed out the decline and asked for the reasons for that decline. That was exactly the question for which this committee was appointed. The Jha Committee has addressed itself to it. As you will notice, one of the terms of reference for the Jha Committee—I am only summarising—was to analyse and indentify the deterrants or causes of the decline. In the report, as you read it, they have given that analysis. They have indentified those causes.

Then, the other thing for which that Committee was appointed was to suggest ways and means for increasing tourist earnings in foreign exchange by 20 per cent. annually. We all know that the tourist industry can be built up only if the accommodation facilities for the coming tourists are adequate, they are up to the standards of the type of people that come. Then we have to build up the necessary transport capacity. We have also to build up a system or a machinery by which we can provide the necessary things of interest and comforts for the tourists, apart from places of interest, amenities, comforts—for example, a good deal of emphasis has been laid on the lack of or shortage of entertainment facilities—well, I would not go into the lighter side of the thing. But that is a very important thing. It has also been said that our prohibition laws have also operated against the growth of tourist traffic. To some extent the irksome experiences that our tourists have gone through—do affect our tourist industry—and I would admit that the incident of Mr. Frederick March was a bad example or it should not have happened. But it did happen. We know that in this particular matter we have to care for certain values that we have before us. On the one hand we have got to follow the Directive Principles in our Constitution and on the other we have got to show some amount of tolerance and

[Shri Raj Bahadur.]

accommodation for the State Governments in this respect and also for the public sentiment. As a matter of fact, let it be said about the West that for them drinking is not an evil. But in this country, I think, the social outlook is completely different. Not to speak of a man who drinks perhaps too much, even one who drinks is not regarded here as a very virtuous person. It does not mean that we condemn those persons. But after all this is the public sentiment and in a way this is our national sentiment too. But it has been very rightly emphasised by Dr. Sapru here that the puritanic angle, the puritanic approach that our nation, our people and our society have got in regard to prohibition or in regard to drinking should not cause any irksome inconveniences, any discomfort to our guests, the tourists. And it is to that end that we have adopted several measures. A good part of this report also devotes its attention to that particular matter. Now I would like to deal bit by bit with the important points that have been raised.

I have, to some extent, explained the decline and the causes for it. But that also bears some further analysis and that analysis is important. It would be seen that so far as the traffic figures are concerned, for the last three years, only in 1961, from the U. S. A. there were as many as 31,345 tourists. In 1962 the number rose to 33,192. This was the year of decline and yet there was this increase. The figure can be seen in the report here. Then from Europe also this increase has been maintained in respect of some countries, where in fact, there was an improvement but by and large we can say that the improvement that was there in case of the U. S. A. was not shown by many of the countries and the total for the Western Europe has shown a decline if we compare the figures of 1962 with the figures for 1961. In 1961 the figure was 38,268—the figure given by Mr. Oberoi—in 1962 it was 37,740. And let it also be remembered that the decline was in respect of tourists from the U.K. The number declined from 22,191 to 21,457. But there was an increase in respect of tourists from France and Germany. So it can be said that the slight decline that we experience in case of tourist traffic from Western Europe was also caused by the general shortages which were by now publicised too much. But a greater decline of 3·9 per cent. is largely accounted for by the decline in the tourist traffic from Asian and African countries. In 1961, the number of tourists from Asian-African countries was 57,776. In 1962 it declined to 52,042. I am happy to say, however, that so far as the U. S. A. and Europe are concerned, the decline has been maintained. If at all, there was a decline, the momentum has been arrested. And in the case of the U. S. A. the figures for the first ten months for 1963 have shown a welcome upward trend. That is, for the first ten months we have a traffic figure of 32,300 as against 33,192 for the whole of the year 1962. If we work on the law of averages, we can confidently expect that the total traffic from the U. S. A. will go up to 38,000 or 39,000 in 1963 as compared to 33,192 in 1962. Similarly, from Europe also in the first ten months of 1963, the number of tourists is 37,000 as against 42,000 for the whole of 1962. If we go on working on the law of averages, then we can very well expect that as against 42,062 in 1962 the traffic figure for Europe will also go up upto 45,000 or more in 1963. That is the situation.

In case of Asian-African countries, the figures have dwindled down further. From 52,000 last year they have come down to 35,206. One may ask: What are the causes? The causes are that these countries are also struggling through a backward economy. They are also in the throes or pangs of expansion. They are also taking all those steps which we are taking to economise on foreign exchange and increasingly restrictions

have been imposed by these countries on their nationals travelling abroad. This is one of the major reasons.

Another major reason is that even in the case of people of Indian origin settled abroad, in Kenya, in Africa, in Hong Kong, or other places, there has been an appreciable decline in the numbers. They also are not coming in as big numbers as they used to. These are the two principal causes why we find that the traffic from Asia and Africa is on the decline. But I quite agree with Mr. Ruthnaswamy that we should take steps to attract more traffic from these countries in Asia and Africa. But they are not on that level of, what you call financial prosperity, as we would find in the case of people in Europe or America because in the case of South-East Asia particularly, which was mentioned by Mr. Ruthnaswamy, these countries are struggling, as I said, to improve their economy, and they might continue to impose certain restrictions which will definitely reflect on our tourist traffic. I will not go more than that on this subject.

Many points have been raised in the debate and one of the important points raised was about hotel accommodation. My friend, Mr. Oberoi, who has played a very prominent role in the development of the hotel industry in our country, made certain observations and gave vent to certain doubts, apprehensions and misgivings about the Government's intentions arising, presumably, out of the recommendations made by the Committee, especially the one for the setting up of a corporation. I think, to some extent, Mr. Vajpayee also shared his apprehensions and he quoted a passage from this report saying that either the Government should not build hotels at all or if it builds it should also run them. That is not the rule everywhere. Apart from that, let me deal with the basic question, namely, why should the recommendation about building hotels or setting up of a Corporation be made at all? The fact of the matter is that we do not have the number of rooms or capacity in our hotels that is necessary for our requirements and for that I would like to invite the attention of the Members to a statement which is given here in Appendix IV of the report giving the "Number of additional rooms required by 1968". The number comes to 5,500. If we want that our tourist traffic should really be cared for, and cared for in a proper way, that is the number that we require. I think at present we have got about 6,000 or 7,000 rooms.

SHRI RAJENDRA PRATAP SINGH: It is 11,000.

SHRI RAJ BAHADUR: Eleven thousand is the number of beds. Rooms are 7,000. However, the number of additional rooms we require now is 5,500. Thus we have got almost to double the number of rooms. And how much is the expenditure? The expenditure is Rs. nineteen crores and ninety-nine lakhs *i.e.*, about Rs. 20 crores, including a foreign exchange component of Rs. 2 crores and 25 lakhs. Now that is the problem. Can our private sector be expected to put in all this investment despite all the advantages that they have been given? I will not burden the House with the details. All these comparative figures and comparative statements about the concessions or facilities have been given in Appendix V. What have we done to encourage this hotel industry as compared to the countries like Austria, Belgium, France, Germany Ireland etc. is there in this appendix, and I think it can be reasonably claimed by us that we have taken substantial steps to attract private investment and, as Mr. Oberoi very generously corroborated us, we have not been found wanting in our support to our hotel industry.

But he referred back to a statement. I do not know whether he quoted me or he quoted Diwan Chaman Lall. Diwan Chaman Lall said something in his report. I was really surprised. I think, if I am not mistaken, that is the statement that has been referred

[Shri Raj Bahadur.]

to. Perhaps, he has quoted me too. But let him recall that in 1957 he raised a very, very, vehement objection against the creation of setting up of the Ashoka Hotel. He said: "Why should the public sector come in at all?" I think the results have shown that if the Ashoka was not there our tourist industry would have suffered much more than it has done so far on account of shortage of hotel capacity in the country. My statement was clear. It was not the Government's policy to step in into this hotel industry as such. We have got so many other things to do. We would not like to come in so long as the private sector and private investment can be attracted to it. But if they do not, we cannot also wait. We shall have to fill up the gap. That is why we have to do something to create the necessary hotel accommodation and that is why the Jha Committee has found it advisable to recommend the creation of a Corporation which should set up or undertake the construction or building up of hotels and also run them if necessary. It has not ruled out that the Corporation should not run the hotels. In fact if we look at Europe, as many as about 38 or 39 hotels are there which are owned by others but the Americans are running them. Quite a number of them are being run by Americans. In this particular connection, may I invite the attention of Mr. Vajpayee to a very pertinent observation in the context of what he quoted on this particular subject. I am only repeating what he read out:

> "The only point which we would emphasise here is that in recommending that the State should build more hotels we are not necessarily implying that the State should also undertake the management and running of all the hotels that it builds."

The word "all" has to be noted. That means it envisaged that some hotels may be run by the Corporation. The last sentence in this paragraph is all the more pertinent:

> "On the whole therefore, while we see no objection in principle to the public sector not only building hotels but also running them, as indeed it is doing in some instances, we feel it would be more advantageous all round for Government to give the running and management of the hotel, once it has been built, on a suitable contract to people who are professionally competent in the field."

So it has kept the discretion of the Government in this matter completely unfettered. In fact we have got to decide each case on its own merits. We know we have created 19 or 20 Rest Houses and we do not find people to run them. The Government will have to provide some machinery. We shall have to do that because they are in out-of-the-way places but I do not agree with Shri Ruthnaswamy when he says that the Government should only run such hotels which are lying in out-of-the-way places or far-off places. That means all the profits and all the gains to the private sector and all the losses and all the pioneering risks to the public sector and then come back and pounce on the public sector and say that it is bureaucratic or it is running inefficiently—I do not think that will be a sound and wise policy. I say, let him not fetter our discretion in this matter. Let us judge each case on its own merits. That is what the report seeks to do. I would not take more time of the House on this point but I must enter a caveat so far as one other point made by Mr. Oberoi is concerned, namely, he claims that Rs. 8 to Rs. 9 crores have been invested in recent years by the private sector. Our calculation shows that the amount will not exceed Rs. 4 crores. He also said something about Bombay—he referred to the Bombay land—I wish he had not done that. We want that hotels should not be expensive. One of the most serious problems so far as the hotel industry

is concerned is the price of the hotel room. I do not want to over-emphasise it but it needs mention. Why? Because it has been rightly said that the class of tourist is changing. We do not now get merely big and monied people who come to our country. People from the middle-income groups, people from the lower income groups are also coming. They cannot come and put up at the Imperial Hotel or Hotel Palace in Srinagar. They cannot do that and cannot afford to do that. So we have to provide cheaper hotels too. The same problem confronts us in the case of Bombay, while we think of a hotel which can be put up at the Nariman Point, which is the place reserved for a hotel. And I do not know, having reserved that place for a hotel, how could any State sector or public sector people come in and bid for that? But that is an information given to me by Shri Oberoi which I have to take with a grain of salt or even with a pinch of salt. However the fact remains that to begin with, it was auctioned for Rs. 500. We intervened and said that it should not be auctioned at such a high price, the price should be lower so that the ultimate cost of the hotel room should not go up but what happened? The next time the bid started from Rs. 1100 per square yard and no less a person than Mr. Oberoi himself was the ultimate, final accepted bidder whose bid has been accepted at Rs. 2600. With Rs. 2600 per square yard where will the cost of constrution of the hotel go and how can I hope and trust that having taken that land at that price, we shall not experience the same tragedy, if I may use that expression, or we may not see the same spectacle that we see in the form of that big tall building that you find near Nizamuddin or near the Humayun's Tomb standing for years and years and not coming up. We want that something should be done quickly for building up our hotel capacity. Time is the essence of the matter so far as our tourist industry is concerned. So, time and price are the essence of the matter so far as the hotel industry is concerned. They have to compete not merely in India or Pakistan but other countries like Hong Kong, Japan, Bangkok, Thailand, Singapore—all these countries are building up for tourism in a very quick and efficient manner and at a very much accelerated pace. They are trying to compete hard. That is why we find that we sometimes cannot run in the race as quickly as we should. That is why a Corporation has been recommended to be set up to fill up the various gaps in the industry.

So with all respect I would say that we have to see that the prices of the hotels are controlled and the prices of hotels remain within the easy reach of the people of middle income groups who are coming in larger numbers, ever-growing numbers.

Another important point in this particular context was raised, I think, by Mr. Vajpayee and some other Members too, though the latter gave their general support to the proposal for the creation of a Corporation. In my comments on that, I would not go beyond quoting one of the important international bodies in this respect. The question was, why should the public sector at all come into this particular field? What is the function of the Corporation? The Corporation will undertake such commercial functions in regard to which there is some shortage in the country. We know that there will remain a Department of Tourism but the functions of the Department will be completely different from the functions of the Commercial Corporation that is proposed to be set up. The Department will be a sort of regulatory body, will be a body which will be responsible for promotion in some respects. It will be a body which will be responsible for the administration but the Corporation to be created will undertake the construction of hotels, if necessary, the running of hotels, if necessary, the provision of entertain-

[Shri Raj Bahadur]

ment facilities etc It may also arrange for the provision of package tours which will include everything in one price given That means a package tour will ensure hotel accommodation, air, rail and road transportation, sight-seeing, information, guides and entertainment—all these things. So the commercial activities only will be taken care of by the Corporation Let me assure the House that this particular view about the Corporation has been expressed not only by the officers connected with this Committee, but it is also supported by very high-placed and experienced people connected with the travel trade. I do not want to import any particular reference or the name of any particular personality in this connection, but I may say that the topmost personalities in the travel trade, are also of this view Apart from that, the Conference on International Travel and Tourism called by the United Nations which was held in Rome in August-September this year, says as follows on this particular matter

> "The activities of national tourist organisations should not be restricted to promotional question alone, but should also cover the establishment, improvement and development of tourist equipment as private enterprise was often unwilling or unable to invest in hotels and other enterprises connected with tourism, because it lacked resources"

That is the opinion expressed by an international body on tourism. Let it not be said that we are trying to push out the private hotel industry, that we want to push out the private hotel industry. We would like to give them all the support and encouragement that they need. But having done that, we cannot rest on our oars. We cannot simply continue to see so much gap still existing between the Supply and Demand. We have to deal with it.

Something was said about air transport and accommodation on our airlines. As hon Members know, we are getting the Caravelles and with a fleet of Caravelles with it, the Indian Airlines will have its capacity sufficiently augmented soon, and I hope—and I can give the House this assurance—that in course of time, in the next eight weeks or so, we shall be in a position to meet all the challenges or demands for the time being that the tourist traffic may make on our domestic air transport Our international air transport, the Air India is well recognised for its excellent service and it has been playing a very important part in the promotion of tourism Let me also refer to one important point about this matter So far as air fares are concerned, while the IAC fares happen to be one of the lowest, perhaps the lowest in the world, compared to other countries, the international fares are not favourable to India A place like Tokyo or Hongkong is nearer to the United States of America than India. A place like Rome in Italy or places in Germany, are nearer to the U S A. and so also other European countries too Even Cairo is nearer But one has to travel over half the globe all the way from America to India. Apart from that, there are other types of fares, special economy class fares for places like Tokyo and Hongkong, which are not available to us. This is also a limiting factor. But we are taking steps to encourage the growth of tourism in this country We have taken some steps and we are going to take further steps For example, we are going to provide necessary air services shortly to places like Khajuraho, Bhuvaneshwar, Konarak, Ajanta, Halebid and Bellur etc And in case the I A C suffers losses on these services, it is proposed to devise ways and means to meet those losses that are likely to be sustained by the I A C, if necessary, even by providing subsidies in respect of such uneconomic services. I think that will be an important step Apart from that, we are also taking care of our airports. We know that our air terminals lack quite a number of amenities For the information of the House I may say that a new air terminal building

at Dum Dum is under construction. Plans for building a new air terminal at Palam are also under preparation. Meanwhile we have taken certain steps to relieve the congestion at Palam and hon. Members might have noticed that. It is also proposed to provide for certain expansions in the Santa Cruz air terminal building.

SHRI AKBAR ALI KHAN: May I ask whether there is any arrangement at Palam for a visitor who wants to go to Bombay, if he is not able to get a plane immediately, to stay at Palam?

SHRI RAJ BAHADUR: As for Palam airport....

SHRI A. M. TARIQ: At Santa Cruz airport they have.

SHRI RAJ BAHADUR: Yes, at Santa Cruz airport they have. As for Palam, the new air terminal building will provide for that. Apart from the lounge and the restaurant, at present, there are no special rooms, except one meant for dignitaries and personalities coming from abroad or going from here, for VIP.s and I think it is open to Members of Parliament also.

Now I would like to refer to some other important points. I have already taken a lot of time. So far as publicity is concerned, we do recognise that our efforts have to be stepped up. We have got publicity and tourist offices abroad, in the U.S.A., at New York, at San Francisco, in Canada, in West Germany, Paris, in London and so on.

SHRI A. M. TARIQ: With regard to publicity, as far as my knowledge goes, you do not have control over the printing of the publicity material. You give these people the idea of someone else does the printing, and whether it is a good or bad, you are forced to accept it. You have no say in the matter.

SHRI RAJ BAHADUR: That problem is very much under our consideration and we are thinking what to do about it. Madam Vice-Chairman, the subject of publicity printing is under the I & B. Ministry and that is what the hon. Member is referring to. We are trying to find out what we can do about it. So far as our publicity abroad is concerned, we are opening two more tourist offices, one at Tokyo and another at Chicago. These are important places from where tourists can be attracted. And Chicago is the origin from where a large number of American tourists come out. So at both these places it has been decided to open Government of India Tourist Offices, at Tokyo and Chicago.

So far as entertainments are concerned, while I take full note of what my hon. friend Mr. Tariq said—and reference to this matter was also made by Mr. Mani, who is not here now, I want to say this. He wanted to know whether we could do something about night life and night entertainment. I do not exactly understand what he means by night life. I can quite see that so far as the question of entertainment is concerned, that is very important and we have to take full care of that. But let me tell the House that—we cannot provide the same type of night life or night entertainment that you find in some other countries—I will not mention them. I do not think that our people would take to them with any degree of enthusiasm, or approval—the spectacles of strip-tease, or other types of shows that people are likely to see abroad. While the younger people might, elder persons like Shri Ruthnaswamy may not.

SHRI M. RUTHNASWAMY: I referred to dances and concerts and other such things.

SHRI RAJ BAHADUR: Those are all right. I quite agree that that type of entertainment we should provide. That is not the type that Mr. Tariq wanted. I doubt if we can introduce a system of Geisha girls....

SHRI A. M. TARIQ: Even Geisha houses are not bad. A Geisha house is a cultural house and a man is honoured by a visit.

SHRI RAJ BAHADUR: I have not given any opinion, good, bad or indifferent, about them. I doubt whether our women folk will like that sort of a thing.

SHRI A. M. TARIQ: Just a moment, Madam Vice-Chairman. Even in the matter of night life, if the hon. Minister will take time and go with his Director-General of Tourism, to some of the hotels in New Delhi, he will see night life there. Night life means what? It means that the man goes there and gets a cup of coffee and talks to people. Music will be going on, you don't stop it at 11 o'clock.

SHRI A. B. VAJPAYEE: Is that all?

SHRI A. M. TARIQ: There may be dance, not a bad thing.

SHRI RAJ BAHADUR: I did not want to import all that. I said our people will not like these strip-tease and nude shows. Our people will not like that. I think they will resent that sort of a thing, and rightly too.

SHRI AKBAR ALI KHAN: Rightly.

SHRI RAJ BAHADUR: There is another matter. We are taking steps in Bombay and Calcutta through cultural organisations there in this behalf. We have done something at Bombay and Calcutta. I am happy to say that in Delhi too some very nice and good shows will be arranged for foreign tourists consisting of dances etc. We hope to provide them with cultural entertainments that they may like. Apart from that I want to make this announcement to the House that a scheme for organising "Sound and Light" spectacle at the Red Fort, which will re-enact dramatically through "Light and Sound" and spoken words, the history of the Red Fort, has been prepared with the help of a foreign expert who has organised such entertainments around well-known monuments in Europe. It is expected that from the 1st October, 1964, a first--rate spectacle in Hindi and English versions will be mounted at the Red Fort, Delhi. That will be the first one. We would like to repeat it at Fatehpur Sikhri as quickly as possible and if our funds allow, at other important monuments also. I would not like to name them now, but positively we would also take this to the South.

When I speak of the South I am in hundred per cent agreement with my friend, Mr. Ruthnaswamy, about the importance he attaches for the promotion of tourist traffic to the South.

SARDAR RAGHUBIR SINGH PANJHAZARI (Punjab): What about Punjab and Kashmir?

SHRI RAJ BAHADUR: In course of time when it succeeds in other places. It is just like the free trade zone at Kandla. You can't have it at all places on one day.

However, let me say that so far as the importance of promotion of tourist traffic to the South is concerned, I am in entire agreement with my hon. friend and recently we have tried to concentrate some attention on that. I think our country in the South can offer certain places of tourist interest which are unmatched, I think, anywhere in the world for their beauty. We are trying to do whatever we can in this respect and we shall give due emphasis to that.

Now a good deal of emphasis was laid about complaints in regard to customs checks and inspection, and in the Report also certain recommendations have been made about them. I would now like to announce a few steps that we propose to take. A number of concessions and simplifications of procedure have been agreed upon and these are as follows. No import licence would be required for the unexposed camera film brought in

by the tourists. That was one of the recommendations of the Committee. No limits would be imposed on the quantity of Indian goods purchased by tourists, and ceilings on souvenirs brought in by the tourists who are in transit through India would not be imposed; they would merely be asked to furnish a guarantee of re-export of such articles. This will be a great convenience to the tourists. It has also been decided by the Central Board of Revenue to create a pool of customs officers who would receive a special orientation in handling the fast-moving air traffic. We propose to exercise the utmost vigilance possible in regard to the checks by the customs officers and it will be our earnest endeavour to see that no inconvenience is caused to the tourists, genuine and *bona fide*, who may come in larger numbers; we would welcome them in ever larger numbers, consistent with our requirements of security against smuggling and other malpractices.

Regarding immigration which was referred to by Mr. Vajpayee, it has been decided that landing permits valid for 72 hours would be given liberally at the point of entry to tourists who may come in groups without visas. They come and suddenly they decide to stay. They had some difficulty so far. Now if one comes to Delhi or Madras or Bombay or Calcutta, he can go to the nearby places in those 72 hours and come back.

सरदार रघुबीर सिंह पंजहजारी : इसके साथ-साथ अगर कोई टूरिस्ट आफिसर्स एयर पोर्ट्स पर भी लगा दें ।

श्री राज बहादुर : वह यदा कदा एयरपोर्ट्स पर मौजूद रहते हैं।

A scheme is also under consideration—I may take the House into confidence—by which we propose to appoint certain special officers of the Tourist Department at three ports to begin with, Calcutta, Bombay and Delhi, to see that all those irksome experiences about which we get complaints are avoided and the tourists are helped generally in regard to all matters of their convenience.

Then visas to short-term visitors to India would be granted without asking for a bank guarantee provided the visa applicant holds a return or onward ticket. These are the decisions on some of the recommendations of the Jha Committee and I hope that hon. Members will find them acceptable and welcome them.

Now, one or two points more and I have done. Something was said about the guides. I think my friend said that they are not only pre-historic but I think he said that they dated back to certain ages which are not even known now. I do not know what is his experience and what is his information or from where he got that, because all our recognised and approved guides are trained people. Most of them are Graduates, Graduates in History particularly, and they are very well behaved. They are proud of their profession and in fact they take a lot of interest in their work.

SHRI A. M. TARIQ: For the information of the hon. Minister of Transport I would request him to instruct the Director-General of Tourism to send him the cutting from the *Statesman* of day before yesterday . . .

SHRI RAJ BAHADUR: Madam, just as one swallow would not make a summer, one exception here or there arising out of the inefficient work of an old-time guide would not change the whole position. We have not been too severe on the old guides because if we do that, then also there will be difficulty. There are a number of people working since the British days and even pre-British days perhaps at the Taj Mahal or in Varanasi. If we turn out all of them, that will also be bad. We are trying to bring about some kind of discipline in them and

we are trying to persuade them to take up our training. We have got training classes for guides and so far as that is concerned, we would not be found wanting.

Then Mr. Chordia referred to the unsatisfactory utilisation of allocations. I would share his feeling and I would say that the level of utilisation so far has not been quite good. So far as the schemes are concerned, we have three types of schemes; type 1 which is entirely financed by the Central Government, type 2 schemes which are financed partly by the States and partly by the Centre and type 3 schemes which are financed entirely by the State Governments. In regard to type 1 schemes, I think the progress is satisfactory more or less. In regard to type 2 the progress is not very satisfactory and I would inform my friend that in Naini Tal when we met for the Tourist Development Council meeting recently the main point on which we concentrated our attention was this and I have been assured by the State Ministers who represented their States at that meeting that they will take all possible steps to see that all the amount allocated to them under this head is utilised by the end of the Plan period. And we all know that the real momentum of development and construction comes only in the third, fourth and fifth year of the Plan because a great deal of preparatory work about specifications, designs, estimates, etc. has to be put in before the actual spade can be applied to the soil for digging the foundation. So I can assure him that so far as this is concerned, we shall not be found wanting.

With these words and with the hope that our tourist traffic will be built up speedily I would like to conclude, but before I do that perhaps I would be failing in my duty if I did not refer to one important point or what I may call, an attack that has been launched on the Majids and Rashids of Srinagar. That was the expression I think that was used by my friend and I think he used it deliberately. I do not know whether he knows all the facts.

SHRI A. V. VAJPAYEE: I know this fact that one of them has been allotted....

SHRI RAJ BAHADUR: I hope the Member will have the patience to hear from me all the facts. The facts are that the amount sanctioned for imports for Pum Posh Hotel is Rs. 2.26 lakhs no doubt. It is for a hotel of more than 200 rooms.

SHRI A. M. TARIQ: No, Sir, Excuse me, Sir.

SHRI A. B. VAJPAYEE: I know this pilloried, I will stand condemned, if I give a wrong information. If it is a wrong information I will come back and apologise to the House. This is the information which I am giving authentically and I need not be challenged. It is for a hotel of more than 200 rooms estimated to cost Rs. 30 to Rs. 40 lakhs. The imports cost only 6 per cent of the total cost. We generally allow, as we have allowed in many cases of Mr. Oberoi and his colleagues, 10 per cent of the total cost for hotels of this category, that is, three to four star hotels. It is definitely not too much. Apart from that it is not a fact that any licence for provisions such as cheese, wines, etc., has been given to the Pum Posh Hotel so far. Licences worth about Rs. 15,000 were recommended for some other things on the presumption that the hotel will open in April 1963.

SHRI A. M. TARIQ: Madam Vice-Chairman, on a point of information. It was in reply to my question—I do not remember the date—in this House or a few days earlier in reply to my question in the Consultative Committee of the Ministry of Transport and Communications the hon. Minister himself was pleased to tell me that the first application from the Pum Posh Hotel was for 100 rooms and at that time the licence was worth Rs. 2

lakhs or something. The second application came recently for another 50 rooms and so the whole roomage of the hotel is....

SHRI RAJ BAHADUR: If the information given by me is wrong I will come and apologise to the House. If the hotel is . .

SHRI A. M. TARIQ: The hon. Minister must have patience. I am addressing the Chair. Madam, I was told that the whole accommodation in the hotel was 150 rooms. It was said in the Consultative Committee or in the House, while replying to my question, when I asked him whether it was 35 rooms or 50. The hon. Minister said that the first application was for 100 rooms. The second application was for another 50 rooms. So, that was the point and it does not cost so much.

SHRI RAJ BAHADUR: If there is a difference of 50 rooms, I will come and explain the matter to the House. This is the information I have got at present (*Interruptions*).

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAHANARA JAIPAL SINGH): Let the Minister continue without interruptions.

SHRI A. M. TARIQ: It is a very important point. I am seeking a point of information. The statement was laid on the Table of the House by the Minister of International Trade, in which he made the statement, here, only three days ago. He says in it that the licence for whisky and brandy is for Rs. 1,000. The licence for sauce is for Rs. 300. That is what I remember. It may be Rs. 300 or Rs. 500. Then, the licence for canned fish is for Rs. 500. Then, there is another licence for sauce, tomato sauce. I remember those words. It is a statement laid on the Table of the House only three days ago. I will request the Secretary or the Officer to get that question and read it here.

SHRI RAJ BAHADUR: That is not all the fact. If any part of my information is wrong, I again repeat that I will come and explain it to the House. Let me finish. I have already said that licences worth about Rs. 15,000 were given for certain things, but when we found that the progress of the hotel has been delayed, we withheld those licences. We will not issue them before the opening of it. We will issue them only just before the opening date. This is the usual practice. Licences are prepared but issued according to the actual progress of the building. We have done that in other cases too. Apart from that, the Minister of International Trade has stated, in reply to a question, that such licences for provisions were issued. This is because the Minister of International Trade's office did not know that the Tourist Department had withheld them. That is the information I give. The Tourist Department had withheld those licences.

SHRI A. B. VAJPAYEE: The Minister of International Trade did not know it.

SHRI RAJ BAHADUR: That information had not been communicated to them by that date that these licences had been withheld.

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया: कौन सी तारीख को यह विदहेल्ड किया गया ?

SHRI RAJ BAHADUR: I have further information about dates etc. If you want it specifically, I will give you.

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : तीन रोज पहले जो जवाब दिया वह दूसरा था और आज कुछ और है। तीन रोज में यह गड़बड़ी कैसे हुई, कुछ समझ में नहीं आ रहा है।

श्री राज बहादुर : आपका खयाल गलत है। आपके सवाल की जो नोटिस गई होगी वह दस दिन पहले गई होगी। तेरह दिन पहले की बात हो गई।

[Shri Raj Bahadur.]

But, Madam, suppose I stand by this. What is wrong if these licences were given for Rs. 15,000? We are giving that to others. If it can be given to Oberois, to Ram Pershads, to Singhs, to Kapurs, why should it not be given to Majids and Rashids? Why should politics be brought in? Simply because Rashids and Majids are related to the *ex*-Prime Minister of Kashmir? Why should everything be tabooed for them. Or why, should they be condemned and why should they be beaten by any stick that the Opposition may find.

SHRI A. B. VAJPAYEE: But they have not built the hotel. How can licences be given for importing those things? That is the objection.

SHRI RAJ BAHADUR: They are building. That is the whole thing. If they are not building it they will not get anything. I have said repeatedly that if they are not building, they will not get anything. But I would say that every opportunity should not be sought to attack people who are not in this House, to attack people behind their back.

SHRI A. B. VAJPAYEE: What about Birlas and Tatas, who are not present in the House? They are being attacked. (*Interruptions*).

SHRI RAJ BAHADUR: I did not know that he is such stout defender and protector of the Birlas and the Tatas.

SHRI A. B. VAJPAYEE: Madam Vice-Chairman, I strongly object. Rashids and Majids may not be in the House, but when the wealth is concentrated in their hands they should be attacked. (*Interruptions*). Is he speaking as their advocate? (*Interruptions*).

SHRI RAJENDRA PRATAP SINHA: On a point of order, Madam Vice-Chairman, I will appeal to you and to my friends not to bring down the level of the debate in this House. We must speak with a certain decorum. I have got great respect for all my friends, but we should not say something that would be interpreted to mean that we are trying to bring personal prejudices on the forum of this House. Otherwise, the prestige of this House will go down. And I appeal to you, Vice-Chairman, that the Chair should always maintain the dignity and decorum of this House by not permitting such debates to be carried on, whether by the Minister or by the Members.

SHRI RAJ BAHADUR: Only one more point and I will have done. Let that chapter be closed.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAHANARA JAIPAL SINGH): Please allow the Minister to finish his speech without any more interruptions.

SHRI RAJ BAHADUR: I have to answer certain points which would otherwise affect prejudicially our tourist trade. It has been said by Mr. Vajpayee that a policeman is always sitting—he was not quite sure about it—at the bar, at the counter where these bars are located. I think that is not a fact. The fact is that an excise official in uniform sits outside the permit room, not at the counter. It is only because people may go in without permits. He has to check the people as to who have got permits and who have not got permits. Therefore, he sits outside the permit room of hotels in Bombay. He checks the permit of each person, whether he is a foreigner or an Indian. He has to do that, but he is not inside the room. He may come in if he suspects anything is wrong. Then and then alone he will come in. Otherwise, he will not go in. So, I would like to say that if this goes out and our foreign guests feel that they are being watched, they are being shadowed by some policemen, or that they are being checked otherwise, that would create a bad impression. Mr. Vajpayee said that he did not know that, but I may assure him that that is not a fact. Only the excise

man sits outside the room. That is all that I can say.

Madam, I am sorry for some heat that came in. I did not mean that. I only wanted to state facts and if these facts are in any way inaccurate, I will be the first person to apologise. If the Minister of International Trade, while he answered that question, did not know that those licences had been withheld, it is my duty to see that the Minister of International Trade also comes and says what is correct. We have to correct these facts and we have to give them to the House when the points are raised. Maybe, here and there, there may be some information which is not altogether right. In that case, we have to correct it, but we do try to check up the information as much as it is humanly possible for us to do it. But I must apologise to the House if I have hurt them. I did not mean that. I only wanted to emphasise that we are trying to build the tourist industry. Let us try to give our best co-operation in spirit and in practice to all concerned in this industry, whatever be their name, whatever be their persuation, whatever be their caste, community or relationship, because after all all have to build the tourist industry and all have to build this country which is ours. Thank you.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAHANARA JAIPAL SINGH): The House stands adjourned till 11 A.M. tomorrow.

The House then adjourned at fifty-eight minutes past five of the clock till eleven of the clock on Thursday, the 19th December, 1963.

GMGIPND—RS—876 RS—7-2-64—590.